सफलता की महाकुंजी : शिव-संकल्प

- पूज्य बापूजी

आप शिव-संकल्प करो

वेद कहता है : जब भी आप संकल्प करो तो शिव-संकल्प करो अर्थात् सुखद संकल्प करो, कल्याणकारी संकल्प करो। 'अरे ! ये ऐसा बोलते हैं, वैसा बोलते हैं... क्या करें बचपन में ऐसा हो गया था, मेरी किसीने सँभाल नहीं ली... क्या करें, मैं पढ़ नहीं पाया, क्या करें आजकल ऐसा हो गया है...।' - यह नकारात्मक चिंतन जो है न, आपकी योग्यताओं को निगल जायेगा। फरियादवाला चिंतन न करो। अपने चिंतन की धारा ऊँची बनाओ - एक बात। दूसरी बात क्रिया से चिंतन ऊँचा है और चिंतन करते-करते चिंतन जहाँ से होता है उस परमात्मा में विश्रांति बड़ी ऊँची चीज है।

घर से जाओ खा के तो बाहर मिले पका के।
घर से जाओ भूखे तो बाहर मिले धक्के ॥

तो आप अपने घर से अर्थात् परमात्मा से सुबह जब नींद से उठो तो थोड़ी देर शांत हो जाओ, निश्चिंत नारायण की प्रीति में विश्रांति पाओ। **तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।** 'मेरा मन सदैव शुभ विचार ही किया करे।' हमारे शिव-संकल्प हों। **समझो, आप बीमार हो। तो ऐसा शिव-संकल्प करो कि 'मेरा पड़ोसी स्वस्थ हो, मुझे गाली देनेवाला भी स्वस्थ हो। मैं बीमार हूँ यह कल्पना है। सब स्वस्थ रहो, स्वस्थ रहो...' आप स्वास्थ्य बाँटो। वे स्वस्थ होंगे तब होंगे, आपका दूसरों के लिए शिव-संकल्प आपको अभी स्वास्थ्य दे देगा।**

'मैं दुःखी हूँ, दुःखी हूँ। इसने दुःख दिया और इसको ठीक करूँ...' तो वह ठीक हो चाहे न हो लेकिन तुम बेठीक हो जाओगे। जो फरियाद करते हैं, नकारात्मक सोचते हैं, दूसरों पर दोषारोपण करते हैं वे अपने लिए ही खाई खोदने का काम करते हैं।

पागल से भी गया-बीता कौन ?

कोई आदमी अपने हाथ से शरीर के टुकड़े कर दे तो उसको आप क्या बोलोगे ? बोले : 'वह पागल है।' पागल भी ऐसा नहीं कर सकता। करता है क्या पागल ? अपने शरीर के चिप्स बनाता है क्या ? **पागल से भी वह गया-बीता है। उससे भी ज्यादा वह व्यक्ति गया-बीता है जो अपने जीवन को ही नकारात्मक विचारों से काट रहा है।** शरीर के चिप्स करो, टुकड़े करो तो एक ही शरीर की बलि होगी लेकिन अपने को नकारात्मक विचारों से जो काट रहा है, वह मरने के बाद भी न जाने कहाँ जाय... !

वास्तव में हम चैतन्य हैं और भगवान के हैं और भगवान हमारे परम हितैषी हैं, सुहृद हैं और जो कुछ हो गया अच्छा हुआ, जो कुछ हो रहा है अच्छा है, जो होगा वह भी अच्छा ही होगा क्योंकि यह नियम हमारे सच्चे परमेश्वर की सरकार का है।

जो नकारात्मक व्यक्ति है वह घर में भी बेचैन रहेगा, पड़ोस में भी बेचैन रहेगा और किसीसे बात करेगा तो सामनेवाला भी उससे ज्यादा देर बात करने में सहमत नहीं होगा परंतु जिसका विधेयात्मक जीवन है वह प्रसन्न रहेगा। तुमको अनुभव होता होगा कि कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जिनसे आप मिलते हो तो आपको लगता होगा कि 'बला जाय, जान छूटे...', ''अच्छा ठीक है, ठीक है...'' जान छुड़ाने में लगते हो। और कुछ ऐसे व्यक्ति हैं कि 'अरे ! भइया, थोड़ा-सा और रुको न...' तो जो प्रसन्न रहता है और विधेयात्मक विचारवाला है, वह हर क्षेत्र में प्यारा होता है और सफल होता है। ॐ ॐ प्रभुजी ॐ... ॐ ॐ प्यारेजी ॐ... ❐

मेरी क्रांतिकारी योजना

– स्वामी विवेकानंदजी

(मद्रास के विक्टोरिया हॉल में दिया गया भाषण)

मैं भारत से पाश्चात्य देशों में कुछ संदेश ले गया था और उसे मैंने निर्भीकता से अमेरिका और इंग्लैंड वासियों के सामने प्रकट किया । कुछ दिनों से मेरे चारों ओर कुछ ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रही हैं जो मेरे कार्य की उन्नति में विशेषरूप से विघ्न डालने की चेष्टा कर रही हैं, यहाँ तक कि यदि सम्भव हो सके तो वे मुझे एकबारगी कुचलकर मेरा अस्तित्व ही नष्ट कर डालें । पर ईश्वर को धन्यवाद है कि ये सारी चेष्टाएँ विफल हो गयी हैं और इस प्रकार की चेष्टाएँ सदा विफल ही सिद्ध होती हैं ।

मैं गत तीन वर्षों से देख रहा हूँ कि कुछ लोग मेरे एवं मेरे कार्यों के संबंध में कुछ भ्रांत धारणाएँ बनाये हुए हैं । जब तक मैं विदेश में था, मैं चुप रहा, मैं एक शब्द भी नहीं बोला पर आज मैं अपने देश की भूमि पर खड़ा हूँ । मैं स्पष्टीकरण के रूप में कुछ शब्द कहना चाहता हूँ ।

एक अफवाह चारों ओर फैल रही है और वह यह कि अमेरिका और इंग्लैंड में जो कुछ काम मैंने किया है, उसमें थियोसॉफिस्टों ने मेरी सहायता की है । मैं तुम लोगों को स्पष्ट शब्दों में बता देना चाहता हूँ कि इसका प्रत्येक शब्द गलत है, प्रत्येक शब्द झूठा है । हम लोग इस जगत में उदार भावों एवं भिन्न मतवालों के प्रति सहानुभूति के संबंध में बड़ी लम्बी-चौड़ी बातें सुना करते हैं । यह है तो बहुत अच्छी बात पर कार्यतः हम देखते हैं कि जब कोई मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य की सब बातों में विश्वास करता है केवल तभी तक वह उससे सहानुभूति पाता है पर ज्यों ही वह किसी विषय में उससे भिन्न विचार रखने का साहस करता है, त्यों ही वह सहानुभूति गायब हो जाती है, वह प्रेम खत्म हो जाता है । फिर कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनका अपना-अपना स्वार्थ रहता है । और यदि किसी देश में ऐसी कोई बात हो जाय जिससे उनके स्वार्थ को कुछ धक्का लगता हो तो उनके हृदय में इतनी ईर्ष्या और घृणा उत्पन्न हो जाती है कि वे उस समय क्या कर डालेंगे, कुछ कहा नहीं जा सकता । यदि हिन्दू अपने घरों को साफ करने की चेष्टा करते हों तो इससे ईसाई मिशनरियों का क्या बिगड़ता है ? यदि हिन्दू प्राणपण से अपना सुधार करने का प्रयत्न करते हों तो इसमें कुछ सुधार संस्थाओं का क्या जाता है ? ये लोग हिन्दुओं के सुधार के विरोध में क्यों खड़े हों ? ये लोग इस आंदोलन के प्रबलतम शत्रु क्यों हों ? क्यों ? यही मेरा प्रश्न है । मेरी समझ में तो उनकी घृणा और ईर्ष्या की मात्रा इतनी अधिक है कि इस विषय में उनसे किसी प्रकार का प्रश्न करना भी सर्वथा निरर्थक है । **(क्रमशः)** ❐

पुण्यदायी तिथियाँ

२४ नवम्बर : रविवारी सप्तमी (सुबह ९-४९ से २५ नवम्बर सूर्योदय तक)

२९ नवम्बर : उत्पत्ति एकादशी (सर्व विघ्नविनाशक तथा सर्व सिद्धि व मोक्षप्रदायक)

२ दिसम्बर : सोमवती अमावस्या (सुबह ८-५५ से ३ दिसम्बर प्रातः ५-५३ तक)

८ दिसम्बर : रविवारी सप्तमी (सुबह ११-१३ से ९ दिसम्बर सूर्योदय तक)

१३ दिसम्बर : मोक्षदा-वैकुंठ-मौनी एकादशी, श्रीमद् भगवद्गीता जयंती

१६ दिसम्बर : श्री दत्तात्रेय जयंती, षडशीति संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर १२-३४ तक)

२० दिसम्बर : गुरुपुष्यामृत योग (प्रातः ७-०२ से २० दिसम्बर सूर्योदय तक)

बापूजी के खिलाफ वे बोल रहे हैं जिनका धर्म से कोई मतलब नहीं
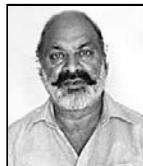
– श्री विजयसिंह भारद्वाज
प्रवक्ता, वि.हि.प., पंजाब

जिस तरीके से बापूजी के ऊपर लांछन लगाये जा रहे हैं, यह एक बहुत बड़ी साजिश है और इससे हिन्दू समाज बहुत ज्यादा दुःखी है । ईसाई धर्म के लोगों ने जगह-जगह तथा आदिवासी इलाकों में अपने स्थान बना लिये हैं और धर्मांतरण करते जा रहे हैं । ऐसे आदिवासी इलाकों में बापूजी ने आश्रम बनाये, वहाँ पर धर्मांतरण को रोकना शुरू किया, विद्यालय बनाये जहाँ पर बच्चे पढ़ भी रहे हैं और उन्हें संस्कार भी दिये जा रहे हैं । तो जब किसीके संस्कारों को या संस्कृति को नष्ट करना होता है तो उसके जो संस्कार-केन्द्र होते हैं, उनके ऊपर वे (विधर्मी) लोग धावा बोलते हैं और उसी तरीके से, जिस तरीके से अब हम देख रहे हैं कि बापूजी पर झूठे इल्जाम लगाकर उन्हें फँसाया जा रहा है ।

मुझे तो यह लगता है कि अभी जो यह ताजा-ताजा निर्भया (दामिनी) वाले केस के बाद कानून बनाया है, वह भी सरकार का षड्यंत्र था। षड्यंत्र के तहत पहले एक बड़ा आंदोलन-सा माहौल खड़ा किया गया, उसके बाद ऐसा कानून बना दिया । **शायद आशारामजी बापू को फँसाने के लिए ही ऐसा कानून बनाया गया !** बापूजी ने उसके साथ बलात्कार नहीं किया, उसको छुआ भी नहीं, कोई सेक्सुअल काम नहीं किया । मुझे लग रहा है कि सरकार ईसाई धर्म के लोगों के षड्यंत्र में आ चुकी है ।

अभी कुछ दिन पहले एक ईसाई पादरी ऐसे ही मामले में पकड़ा गया लेकिन आज तक इन्होंने किसी चर्च को नहीं छेड़ा, उसके किसी धर्मस्थान को नहीं छेड़ा तो बापूजी के अभी तो आरोप सिद्ध नहीं हुए फिर उनके आश्रमों के ऊपर प्रहार क्यों ?

जो बापूजी के खिलाफ बोल रहे हैं वे तो ऐसे लोग हैं जिनका धर्म से कोई मतलब नहीं है, जो ईसाई धर्म के स्कूलों में पढ़े हुए हैं और जो उनके सिखाये अनुसार ही काम करते हैं । ऐसे लोग सिर्फ बापूजी को नहीं बल्कि हिन्दू धर्म, हिन्दू देवी-देवताओं को भी बदनाम करते हैं ।

अभी संत आशारामजी बापू की बेटी व उनकी पत्नी के ऊपर ऐसे घिनौने इल्जाम व केस करवाये जा रहे हैं, शर्म आनी चाहिए ! कि एक माँ, एक बेटी ऐसा काम कर सकती है क्या !! यह सारा हिन्दू समाज सब कुछ समझ रहा है ।

कहते हैं कि एक झूठ को सौ बार बोला जाय तो वह झूठ भी सच लगने लग जाता है । अतः मैं सभी से अपील करूँगा कि एकजुट हो जायें । आज बापूजी के ऊपर जो विपदा आयी है, ऐसी विपदा किसीके ऊपर भी आ सकती है । किसीको भी बदनाम किया जा सकता है । जब सभी एकजुट हो जायेंगे तो मिल के मुकाबला कर लेंगे । अगर अब न समझे तो कभी नहीं समझ पाओगे । मैं सभी से अपील करता हूँ कि हिन्दू समाज के जितने साधु-संत हैं, जितने धार्मिक संगठन हैं वे सभी षड्यंत्रकारियों को मुँहतोड़ जवाब देने के लिए समाज के सामने आयें ।

संतों के खिलाफ साजिश

– श्री विनय जालंधरी
शिवसेना प्रमुख, उत्तर भारत

संतों के खिलाफ साजिश रची जा रही है । शिवसेना संतों के खिलाफ हो रहे अत्याचार को कदापि सहन नहीं करेगी । हमारी माँग है कि सरकार संतों की सुरक्षा के लिए कड़े कदम उठाये । ❐

साजिश के तहत बापूजी व उनके पूरे परिवार पर अत्याचार हो रहा है
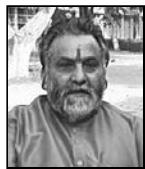
– महंत शंभुनाथ शास्त्री, महासचिव व प्रवक्ता, राष्ट्रवादी षड्दर्शन संत-समाज

जब से संत आशारामजी बापू द्वारा हिन्दुओं को धर्म-परिवर्तन से बचाने का अभियान चला था, उसी दिन से यह खतरा पैदा हो गया था कि हिन्दू संतों के प्रति कोई-न-कोई साजिश बड़े व्यापक तौर पर जरूर चलायी जायेगी। एक साजिश के तहत संत आशारामजी बापू, उनके पुत्र व पूरे परिवार पर अत्याचार हो रहा है।

साजिश के अंतर्गत बापूजी को फँसाया जा रहा है, जिससे हिन्दू संतों के प्रति एक घृणा पैदा हो जाय, लोग ईर्ष्या और नफरत की दृष्टि से उन्हें देखें। **अगर इस साजिश में सरकार कामयाब हो जाती है तो भविष्य में एक नहीं, बहुतायत में संतों पर तरह-तरह के लोग लांछन लगाकर उनका चरित्रहनन करेंगे, उनके आश्रमों पर कब्जा करेंगे, कमिटियाँ बनेंगी। संतों को आश्रम से बाहर निकालने की यह बहुत बड़ी साजिश है। सब लोग सावधान हो जाओ !**

मैं सभी संतों और हिन्दू समाज से यह अपील करना चाहता हूँ कि अगर हिन्दू समाज के सभी लोगों ने विरोध नहीं किया तो समाज को इसका बहुत बड़ा व घातक परिणाम भोगना पड़ेगा। ❐

संत आशारामजी बापू के विरुद्ध झूठे बयान देनेवाले अमृत प्रजापति और महेन्द्र चावला अब होंगे कानूनी शिकंजे में...

नवभारत व राज एक्सप्रेस, छिंदवाड़ा। संत श्री आशारामजी महिला आश्रम, छिंदवाड़ा की एक साध्वी ने माननीय मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी के समक्ष वैद्य अमृत प्रजापति के विरुद्ध परिवादपात्र धारा २९८, ५०० एवं ५०५ भारतीय दंड विधान के अंतर्गत एवं ६६ ए.आई.टी. एक्ट के तहत प्रकरण प्रस्तुत किया है।

साध्वी के अधिवक्ता श्री अनुपम गढ़ेवाल ने माननीय न्यायालय को बताया कि अमृत प्रजापति ने एक न्यूज चैनल में महिलाओं के चरित्रहनन एवं साध्वियों के विरुद्ध आपत्तिजनक कथन किये थे, जिसका उल्लेख सीडी में है। उक्त सीडी माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत की गयी, जिसके उपरांत माननीय न्यायालय ने संतुष्ट होकर कथन एवं विचारण के लिए उक्त प्रकरण रखा है। गौरतलब है कि कुछ वर्ष पहले अमृत प्रजापति ने आश्रम में एक फैक्स भेजा था, जिसमें ५० करोड़ रुपयों की फिरौती की माँग की गयी थी। फिरौती न मिलने पर बापूजी तथा नारायण साँईं को लड़कियों, जमीनों आदि से संबंधित झूठे मामलों में फँसाने की धमकी दी गयी थी और कुछ ही समय बाद उसने अपनी ही पत्नी को बुरका पहनाकर बापूजी पर बलात्कार का आरोप लगवाया था। फिर उसीने न्या. श्री डी. के. त्रिवेदी के समक्ष अपनी यह करतूत स्वीकार भी की थी। पैसों के लिए इस हद तक गिर जानेवाला बिकाऊ अमृत वैद्य पिछले कुछ दिनों से चैनलों पर आकर झूठे, अनर्गल और मनगढ़ंत आरोप लगा रहा है।

महेन्द्र चावला, जिसे आश्रमविरोधी गतिविधियों के कारण आश्रम से निकाल दिया गया था, द्वेष व दुर्भावना से ग्रस्त यह व्यक्ति देशविरोधी धर्मांतरणवाली ताकतों के हाथों की कठपुतली बन के टीवी चैनलों में झूठी बयानबाजी कर साधिकाओं को अपमानित करनेवाले शब्दों का उपयोग कर रहा है। इसकी शिकायत 'राज्य महिला आयोग' में भी की गयी है। अधिवक्ता श्री अनुपम गढ़ेवाल द्वारा महेन्द्र चावला को कार्यवाही हेतु नोटिस जारी किया गया है। आगामी समय में महेन्द्र चावला व अमृत प्रजापति कानूनी शिकंजे में आनेवाले हैं क्योंकि उनके विरुद्ध महत्त्वपूर्ण साक्ष्य प्राप्त हो गये हैं। ❐

सरलता-सज्जनता की मूर्ति, लाखों-करोड़ों की माँ लक्ष्मीदेवीजी के उद्गार

पूज्य बापूजी के ऊपर जो आरोप लगे हैं, वे बेबुनियाद हैं। मेरे बापूजी कितने संयमी संतपुरुष हैं ! उनकी छत्रछाया में लाखों-करोड़ों लोगों का जीवन संयमी हुआ है यह सभी लोग जानते हैं। पूज्य बापूजी के लिए यह कुप्रचार टिकेगा नहीं । बापूजीरूपी सूर्य को कुप्रचार के झूठे आरोप रूपी बादल ज्यादा समय ढँक नहीं पायेंगे । मेरा सौभाग्य है कि बापूजी जैसे पवित्र पुरुष मुझे पतिरूप में मिले हैं और अब मैं उनको अपने गुरुदेव के रूप में पूजती हूँ।

बापूजी शादी के ८ दिन पहले भरूच (गुज.) के अशोक आश्रम में चले गये थे। उनके भाई और दूसरे लोगों ने हाथाजोड़ी करके उनको वचन दिया कि ''तुम एक बार शादी कर लो फिर संयम, ब्रह्मचर्य और साधुताई का जैसा भी जीवन बिताओगे, हम रोकेंगे नहीं । अभी तुम शादी नहीं करोगे तो हमारे बेटे-बेटियों के विवाह आदि में अड़चन होगी ।'' शादी के बाद आपके और मेरे गुरुजी (बापूजी) संयम से रहने लगे। उनकी माता और भाभी ने मेरे ऊपर दबाव बनाया कि ''ये साधु बन जायेंगे। तुम इनके कमरे में जाओ, इनको संसारी बनाओ ।'' और मेरे माता-पिता, भाई-भाभी ने भी खूब कह रखा था कि ''वे (बापूजी) ब्रह्मचारी रहना चाहते हैं, साधु बनना चाहते हैं। तुम उनको पिक्चर में ले जाना और संसारी बनाना ।'' मैंने उनको पिक्चर की बात कही तो वे रविवार को पिक्चर के लिए मुझे ले गये लेकिन सत्संग में पहुँच गये। हरगोविंद पंजाबी उनके सत्संगी मित्र थे। बापूजी ने उनके द्वारा उनकी पत्नी को कहलवा दिया कि ''इसे सत्संग का रंग लगाओ ।'' हरगोविंदजी की पत्नी के संग से मेरे मन में पिक्चर आदि के तुच्छ संस्कार जो लोगों ने भरे थे, वे कट गये। यह पहली कृपा उनकी (बापूजी की) मुझ पर हुई । मेरे भक्ति और भगवत्प्राप्ति के संस्कार जग गये । 'भगवत्प्राप्ति ही सार है, बाकी सब बेकार है' - ये सब संस्कार पति-परमात्मा की पहली कृपा से प्रकट हो गये । ''घर में रहने से फिसल सकते हैं इसलिए मैं नीलकंठ महादेव आश्रमशाला में रहूँगा व दिन में भाई को दुकान में मदद करूँगा ।'' ऐसा कह के वे चले गये। वहीं जब परीक्षा के दिन आये तो 'हितोपदेश' पुस्तक का एक श्लोक उनके पढ़ने में आया :

तेनाधीतं श्रुतं तेन तेन सर्वमनुष्ठितम् ।
येनाशाः पृष्ठतः कृत्वा नैराश्यमवलम्बितम् ॥

'जिसने आशा को पीछे कर आशारहितता का सहारा लिया है, उसीने पढ़ा, उसीने सुना और उसीने सब कुछ कर लिया ।' **(१.१४६)**

उसने सब अध्ययन कर लिये, सारे अनुष्ठान कर लिये जिसने इच्छा-वासनाओं को छोड़ा और इच्छारहित पद का अवलम्बन लिया है । अब इन महापुरुष को परीक्षा से क्या लेना ? घर आये और पूजा के कमरे में मुझे बुलाकर कहा कि ''ईश्वर के सिवाय कहीं भी मन लगाया तो अंत में रोना ही पड़ेगा। मैं ईश्वरप्राप्ति के लिए जा रहा हूँ।'' कहकर चले गये । सात वर्ष तक परम पूज्य लीलाशाहजी की छत्रछाया में रहे ।

मैं इनकी (पूज्य बापूजी की) साधना, संयम, नियम-निष्ठा से प्रभावित थी । इनके गुरुजी को मेरी सज्जनता बतायी गयी और वे किसी कारण से अहमदाबाद पधारे। सद्गुरु साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज ने मेरे सिर पर हाथ रखा, तब से मेरे आध्यात्मिक जगत में चार चाँद लग गये । आज लाखों-करोड़ों महिलाओं में मैं जितनी सुखी हूँ और आध्यात्मिक प्रसाद से पावन हुई हूँ यह मैं जानती हूँ, भगवान जानते हैं और आपके और हमारे गुरुजी (पूज्य बापूजी) जानते हैं। मैं बहुत-बहुत भाग्यशाली हूँ कि मुझे ऐसे महान आत्मा पतिरूप में मिले और गुरुरूप में बहुत मदद करते हैं।

संतों को समझने के लिए सद्बुद्धि और शास्त्रज्ञान चाहिए। कुप्रचारवालों को क्या पता कि सत्संगियों को क्या मिलता है ! उज्ज्वल भविष्य के साथ हमारे कुल-खानदान और जाति ⟶

आश्रम का कुप्रचार करनेवालों को सर्वोच्च न्यायालय का करारा तमाचा

५ वर्ष पूर्व जुलाई २००८ में संत श्री आशारामजी गुरुकुल, अहमदाबाद में पढ़नेवाले दो बच्चों की अपमृत्यु के मामले को लेकर आजकल कुछ चैनलों पर समाज को गुमराह करनेवाली झूठी खबरें चलायी जा रही हैं, जबकि सच्चाई इस प्रकार है :

इस मामले में ९-११-२०१२ को सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्णय में आश्रम के सात साधकों पर आपराधिक धारा ३०४ लगाने की गुजरात सरकार की याचिका को खारिज कर दिया था। मामले की सीबीआई से जाँच कराने की माँग को भी ठुकरा दिया था । सर्वोच्च न्यायालय ने गुजरात उच्च न्यायालय के फैसले को मान्य रखा था ।

न्याय-सहायक विज्ञान प्रयोगशाला (एफएसएल), शव-परीक्षण (पोस्टमार्टम) आदि कानूनी एवं वैज्ञानिक रिपोर्टें बताती हैं कि बच्चों के शरीर के अंगों पर मृत्यु से पूर्व की किसी भी प्रकार की चोटें नहीं थीं। दोनों ही शवों में गले पर कोई भी जख्म नहीं था। सिर के बालों का मुंडन या हजामत नहीं की गयी थी। बच्चों के साथ किसीने सृष्टिविरुद्ध कृत्य (सेक्स) नहीं किया था। बच्चों के शरीर में कोई भी रासायनिक विष नहीं पाया गया।

एफएसएल रिपोर्ट में स्पष्टरूप से उल्लेख किया गया है कि दोनों बच्चों के शवों पर जानवरों के दाँतों के निशान पाये गये अर्थात् शवों के अंगों को निकाला नहीं गया था अपितु वे जानवरों द्वारा क्षतिग्रस्त हुए थे। **दोनों बच्चों पर कोई भी तांत्रिक विधि नहीं की गयी थी।** पुलिस, सीआईडी क्राइम और एफएसएल की टीमों के द्वारा आश्रम तथा गुरुकुल की बार-बार तलाशी ली गयी, विडियोग्राफी की गयी, विद्यार्थियों, अभिभावकों तथा साधकों से अनेकों बार पूछताछ की गयी परंतु उनको तांत्रिक विधि से संबंधित कोई सबूत नहीं मिला।

जाँच अधिकारी द्वारा धारा १६० के अंतर्गत विभिन्न अखबारों एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पत्रकारों तथा सम्पादकों को उनके पास उपलब्ध जानकारी इकट्ठी करने के लिए 'समन्स' दिये गये थे। 'सूचना एवं प्रसारण विभाग, गांधीनगर' द्वारा अखबार में प्रेस-विज्ञप्ति भी दी गयी थी कि 'किसीको भी आश्रम में यदि किसी भी प्रकार की संदिग्ध गतिविधि अथवा घटना होती है - ऐसी जानकारी हो तो वह आकर जाँच-अधिकारी को जानकारी दे।' यह भी स्पष्ट किया गया था कि 'जानकारी देनेवाले उस व्यक्ति को पुरस्कृत किया जायेगा एवं उसका नाम गुप्त रखा जायेगा।' इस संदर्भ में भी कोई भी व्यक्ति सामने नहीं आया।

न्यायमूर्ति त्रिवेदी जाँच आयोग में बयानों के दौरान आश्रम पर झूठे, मनगढ़ंत आरोप लगानेवाले लोगों के झूठ का भी विशेष जाँच में पर्दाफाश हो गया। लगातार ५ वर्षों तक जाँच करने के पश्चात् १ अगस्त २०१३ को न्यायमूर्ति श्री डी. के. त्रिवेदी जाँच आयोग ने अपनी जाँच रिपोर्ट गुजरात सरकार को सौंप दी है। कुछ मीडिया में आयी खबर के अनुसार इस रिपोर्ट में आश्रम पर लगाये गये झूठे आरोपों को नकार दिया गया है और आश्रम को क्लीन चिट दी गयी है। ❐

⟶ की ऐसी कोई महिला नहीं होगी जितना मेरा जीवन धन्य हुआ और मेरे करोड़ों-करोड़ों बच्चों का जीवन भी बापूजी के सत्संग-सान्निध्य से उज्ज्वल हुआ है। भगवान शिवजी ने कितने सुंदर वचन कहे हैं : **धन्या माता पिता धन्यो...**

मेरी बेटी भारती पर जो आरोप लगे हैं वे सब झूठे हैं। मुझे उसके आचरण पर और संयम पर पूरा विश्वास है। वह संयमी है और उसके संग से अनेक लड़कियाँ संयमी हो जाती हैं। क्या आप सबको मानने में आयेगा कि ऐसा (आरोपित) काम पत्नी और बेटी कर सकती है ? कभी नहीं, कभी नहीं !

(भारतीदेवीजी के सम्पर्क में भी कई बच्चियों का जीवन संयमी, सदाचारी और उज्ज्वल हुआ है और लक्ष्मी मैया के सम्पर्क में भी । और हमारी प्यारी मैया के परिवारवाले भी गुरुभाई एवं गुरुबहनें ही हैं। - सम्पादक) ❐

गर्भपात की खबरें बेबुनियाद

कुछ बिकाऊ मीडिया चैनलों तथा कुछ आश्रम से निकाले गये बिकाऊ लोगों ने महिला आश्रम पर बेबुनियाद व झूठे आरोप लगाये थे कि 'आश्रम में एबोर्शन सेंटर चलता है । कमरा नम्बर ३०२ में गर्भपात कराया जाता था । वहाँ की संचालिका ध्रुव बहन यह कार्य करवाने लड़कियों को ले जाती थी ।' परंतु 'गुजरात महिला आयोग' ने ३ घंटे तक पूछताछ व जाँच करने के बाद इन सब आरोपों को पूरी तरह खारिज करते हुए आश्रम को क्लीन चिट दे दी थी । उसके बाद 'सुदर्शन न्यूज चैनल' ने ध्रुव बहन तथा वैद्य नीता बहन से बात की तो उन्होंने इन आरोपों को झूठा व बेबुनियाद बताया ।

प्रश्न : ''आरोप लगाये गये हैं कि आप महिला आश्रम से गर्भपात के लिए लड़कियों को बाहर लेकर जाती थीं और कई बार कमरा नम्बर ३०२ में गर्भपात होता था ।''

वैद्य नीता बहन : ''आश्रम के किसी भी कमरे में या किसी भी अस्पताल में आज तक महिला आश्रम की किसी भी बहन का गर्भपात किया गया हो, यह बात बिल्कुल ही झूठी और निराधार है । ३६ साल से महिला आश्रम चल रहा है लेकिन आज तक आश्रम के अंदर या बाहर अथवा किसी औषधि के द्वारा किसी भी बहन का गर्भपात कराया गया हो, ऐसी घटना कभी भी घटी ही नहीं है ।''

प्रश्न : ''क्या यह बात सच है कि महिला आश्रम में गर्भपात होता है ?''

ध्रुव बहन : ''ऐसा कुछ भी मैंने न ही किया है, न देखा है और न ही सुना है । ये आरोप बिल्कुल गलत व बेबुनियाद हैं और मैं इसको बिल्कुल खारिज करती हूँ । 'गुजरात महिला आयोग' ने भी हमको क्लीन चिट दे दी है और हम खुद महिला मंडल द्वारा 'गर्भपात विरोधी अभियान' चलाते हैं । महिला मंडल में हम बहनों को समझाते हैं और बापूजी भी सत्संग में बोलते हैं कि 'गर्भपात महापाप है ।' और मुझ पर जो आरोप लगा है तो न कभी मैंने कोई दवाई किसीको दी है और न मैं कभी किसीको ऐसे काम के लिए बाहर ले जाती थी । मेरे ऊपर यह आरोप लगाना सरासर गलत है ।''

शिवाभाई को बदनाम करने के लिए बनायी गयी बिल्कुल झूठी कहानी

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू तथा उनके साधकों को बदनाम करने के लिए बिकाऊ मीडिया रोज नये-नये हथकंडे अपना रहा है । बिल्कुल झूठी, गढ़ी हुई कहानियाँ बना-बना के मीडिया दिखा और प्रकाशित कर रहा है । अभी हाल ही में २१ व २२ अक्टूबर को मीडिया में एक खबर लगायी गयी (खबर क्या, झूठी कहानी थी) कि बापूजी के सेवादार शिवाभाई मुंडारा गाँव, जिला पाली, राजस्थान का निवासी है तथा उनकी पत्नी का नाम हुलिया देवी है और उनके पिता का नाम गुलाबजी चौधरी है और कहा कि शिवा का असली नाम गोमाराम उर्फ सुरेश गुलाबजी चौधरी है ।

यह बात सरासर झूठ है । कुछ मीडिया बिना सिर-पैर की बातें बताकर जनता को गुमराह कर रहा है । जिस व्यक्ति का ड्राइविंग लाइसेंस 'न्यूज 24' चैनल ने दिखाया है वह सुरेश गुलाबजी चौधरी नाम का दूसरा व्यक्ति है । लाइसेंस में दिया हुआ फोटो शिवा से बिल्कुल अलग है । जो व्यक्ति जीवित हो, उसके नाम, गाँव तथा माता-पिता को ही बदल के रख देना तथा एक अविवाहित व्यक्ति को विवाहित घोषित कर उसकी संतानें भी पैदा कर देना - यह है मीडिया की साजिश ! ऐसे मीडियावालों से लोगों का विश्वास उठ गया है । ❑

आप किस पर विश्वास करोगे ?

– महानिर्वाणी अखाड़े के महामंडलेश्वर परमहंस श्री नित्यानंदजी महाराज

मैंने बापूजी के केस का पूरी तरह से अध्ययन किया है और सारी जानकारी ली है। मैंने कुछ डॉक्टरों से भी परामर्श लिया जो इस तरह की मेडिकल रिपोर्ट बनाते हैं। मैंने उनसे इस रिपोर्ट के आधार पर कानूनी अभिप्राय माँगा तो उन्होंने कहा : ''स्वामीजी ! मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर हम १०० प्रतिशत, निश्चित रूप से कह सकते हैं कि न रेप है और न ही रेप की कोशिश की गयी है और यौन उत्पीड़न का भी केस नहीं है क्योंकि किसी भी नाबालिग की त्वचा बहुत ही मुलायम होती है और अगर कोई उत्पीड़न होता तो उसके निशान रहते।''

आप समझते हो ! १२-१३ साल पहले कोई तथाकथित घटना होती है। कोई महिला आती है और वह कहती है तो आप उस पर विश्वास करोगे या फिर उस पुरुष पर जिसने अपना पूरा जीवन विश्व-कल्याण के लिए लगा दिया ? वे बोल रहे हैं २००२ में घटना घटी। वे सब स्पष्ट रूप से जानते हैं कि उनका केस न्यायालय में नहीं टिक पायेगा। ११-१२ वर्ष तक किसी भी महिला का चुप रहना असम्भव है। अब २०१३ चल रहा है, ११-१२ साल के बाद वे आते हैं और झूठा मामला दर्ज कराते हैं !

पुलिस भी जानती है कि यह केस न्यायालय में जाने लायक नहीं है। शायद पुलिस इस केस में चार्जशीट भी दायर नहीं करेगी।

तथाकथित हिन्दू गुरु, जिन्होंने आशाराम बापू और अन्य हिन्दू गुरुओं को दुर्वचन कहे, उनसे आपको प्रश्न पूछना चाहिए, उनको पाठ सिखाना चाहिए। अभी मैं यहाँ महानिर्वाणी अखाड़े का महामंडलेश्वर होने के नाते अपना पक्ष स्पष्ट रूप से रखता हूँ कि **किसी भी हिन्दू संत को यह अधिकार नहीं है कि वे किसी दूसरे हिन्दू संत की निंदा करें। उनमें से बहुत लोग जो आशारामजी बापू पर टीका-टिप्पणी कर रहे हैं, वे संत ही नहीं हैं। उनकी हिम्मत कैसे हुई यह कहने की कि 'आशारामजी बापू संत नहीं हैं !' अब मैं कहता हूँ कि जो भी बापू की निंदा कर रहे हैं, वे संत नहीं हैं।**

सभी भक्त और शिष्य यह स्पष्ट रूप से निर्णय कर लें (और अपने गुरु से कहें) कि 'यदि आप दूसरे हिन्दू गुरुओं की निंदा करेंगे तो हम आपका बहिष्कार करेंगे।' अगर आप इस समय आशारामजी बापू का समर्थन नहीं करना चाहते तो कम-से-कम चुप रहो। मैं आपको और पूरे देश को स्पष्ट रूप से कह रहा हूँ - जो बापूजी को गलत बता रहे हैं, मैं उन गुरुओं को जिन्हें लोग 'गुरु' कहते हैं, 'गुरुजी' कहते हैं, इस समय चुनौती देता हूँ... मैं उनसे एक सीधा प्रश्न पूछता हूँ कि क्या आपने भक्तों की प्रेरणा को जीवित रखने के लिए आशारामजी बापू का उपयोग नहीं किया है ? क्या आपने उनके कठिन परिश्रम से लाभ नहीं लिया है ? तो फिर आपको उनके कठिन परिश्रम के प्रति कृतज्ञता क्यों नहीं है ? आप लोग कम्युनिस्ट और नास्तिक संस्था के नेताओं की तरह बात कर रहे हैं। आप समझो ! आप लोग आस्था पर आधारित संस्था के अधिष्ठाता हो। अगर हमें ईमानदारीपूर्वक विश्वास है कि यह सब झूठ है तो हमें आशारामजी बापू का समर्थन करना चाहिए। अगर विश्वास नहीं है, अगर संदेह है तो कम-से-कम चुप रहें।

तुम क्यों सब जगह जा-जाकर गलत बोल रहे हो जबकि न्यायालय में अभी तक कुछ भी साबित नहीं हुआ है। तुम न्यायालय के निर्णय आने तक इंतजार क्यों नहीं करते ? तुम वक्तव्य देने के लिए उतावले क्यों हो रहे हो ? अगर आपको लगता भी है कि कुछ हुआ है तो जब तक न्यायालय निर्णय न ले ले तब तक चुप रहिये।

(स्वामी नित्यानंदजी के बारे में भी खूब दुष्प्रचार किया गया परंतु उनके बारे में दिखायी गयी सेक्स सीडी फर्जी निकली। इससे संबंधित आपत्तिजनक खबरों के प्रसारण के संदर्भ में 'स्टार विजय' व 'आज तक' चैनलों को माफीनामा प्रसारित करना पड़ा।) ❐

ज्ञान-प्रेम-माधुर्य का महासागर सनातन धर्म

- पूज्य बापूजी

दुनिया के हर प्राचीन धर्म ने, दुनिया के हर सुलझे हुए सम्प्रदाय व कई प्रबुद्ध महापुरुषों ने और राजा-महाराजाओं ने जिसको सहर्ष स्वीकार किया और अनुभूतियाँ की हैं; सारी पृथ्वी पर और स्वर्ग में ही नहीं अपितु अतल, वितल, तलातल, रसातल, महातल, जनलोक, भूवर्लोक, तपलोक आदि अन्य लोकों पर भी जिसका साम्राज्य छाया हुआ है, वह सार्वभौम ब्रह्मांडव्यापी धर्म है 'सनातन धर्म' ।

भिन्न-भिन्न देश, काल और परिस्थिति के अनुसार पृथक्-पृथक् धर्म बने हैं किंतु सनातन धर्म सम्पूर्ण मानव-जाति के विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। सनातन सत्य रूपी धर्म जीवमात्र के भीतर, हर दिल में धड़कनें ले रहा है । सनातन सत्य हर दिल में छुपी हुई परमात्मा की वह सुषुप्त शक्ति है, जिसके जागृत होने से मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है, पूर्ण आत्मिक विकास होता है । जितने अंश में मानव सनातन सत्य के निकट होता है, उतने अंश में उसका जीवन मधुर होता है । जितने अंश में उसका सनातन सत्य से संबंध जुड़ता है, जितने अंश में अपनी सुषुप्त शक्तियाँ सनातन चेतना से प्राप्त करता है, उतने अंश में वह अपने क्षेत्र में उन्नत होता है । यह एक हकीकत है कि मनुष्य जितना-जितना 'देह' को सत्य मानकर संकीर्ण कल्पनाएँ रचता है, उतना-उतना सच्चे सुख से दूर होता जाता है । आज का मनुष्य शरीर के भोगों में, बड़ी-बड़ी सुख-सुविधाओं से सम्पन्न महलों में रहने में, भौतिक ऐश-आरामों में रचे-पचे रहने में ही सच्चा सुख मान बैठा है और उसे ही प्राप्त करने में अपना सारा समय बरबाद कर देता है । फलस्वरूप वह अपने आत्मा-परमात्मा के ज्ञान से वंचित ही रह जाता है ।

भागवत के प्रसंग में आता है कि रहूगण राजा राजपाट का सुख भोगते-भोगते विचार करते हैं : 'जिस देह को जला देना है, उस देह को आज तक तो बहुत भोगों और सुख-सुविधाओं में रमाया लेकिन ज्यों ही मृत्यु का एक झटका आयेगा तो सब कुछ पराया हो जायेगा । मृत्यु आकर सब छीन ले उसके पहले उस सनातन शांति से मुलाकात कर लें तो अच्छा रहेगा ।'

जहाँ में उसने बड़ी बात कर ली,
जिसने अपने-आपसे मुलाकात कर ली ।

सनातन धर्म हमें अपने वास्तविक स्वरूप अर्थात् स्व-स्वरूप को प्रकट करने की आज्ञा देता है । हमारा आदि धर्म हमें सिखाता है कि पंचभूतों का बना शरीर 'हम' नहीं हैं । वास्तव में हम स्वयं ब्रह्म हैं, जो सृष्टि का कर्ता और धर्ता है । 'मैं और तुम' - ऐसे भेद हमने बनाये हैं । वास्तव में हम अभेद ब्रह्म हैं। सारा जगत ब्रह्मस्वरूप ही है । माया के पाश में बँधे हुए एक-दूसरे को हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि मानते हैं और संकीर्ण विचारधाराओं में बहने लगते हैं । दुःख, अशांति, झगड़े, चिंता आदि में हम उलझते गये हैं, वरना सनातन धर्म **एको ब्रह्म द्वितीयोनास्ति...** हम सभी एक हैं, भिन्न नहीं

हैं... यह दिव्य संदेश विश्व को दे रहा है और यही तो सनातन सत्य भी है । इस सनातन सत्य रूपी व्यापक दृष्टिकोण का प्रभाव समाज पर जितने अंश में होता है, उतने ही अंश में स्नेह, आनंद, भाईचारा, दया, करुणा, अहिंसा आदि दैवी गुणों से समाज सम्पन्न होता है । इस सत्य के साथ अपना नाता जोड़ना ही व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक जगत में प्रगति का मूल मंत्र है, मधुर जीवन की कुंजी है । फिर चाहे रमण महर्षिजी हों, साँईं लीलाशाहजी हों, ऋषि याज्ञवल्क्य हों, चाहे रामावतार या कृष्णावतार हों, चाहे कोई राजनैतिक जगत में सेवा करनेवाला हो ।

ऐसा नहीं कि उन्होंने जो पाया है, वह हम नहीं पा सकते । हममें भी वही योग्यता है । सिर्फ ठीक मार्गदर्शन से सही पथ पर लगने की आवश्यकता है । स्वामी रामतीर्थ अपने ईश्वर से मुलाकात करके ऐसे छलके कि सनातन धर्म के अमृत को बाँटते-बाँटते वे अमेरिका पहुँचे । उस समय (सन् १८९९-१९०१) अमेरिका के राष्ट्रपति रुझवेल्ट ने स्वामी रामतीर्थ की उदारता को अखबारों द्वारा सुना और उससे वे इतने प्रभावित हुए कि स्वयं चलकर रामतीर्थ के दर्शन करने गये । अखबारवालों को स्वामी रामतीर्थ के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा था : ''मैंने आज तक सुना था कि जीसस सनातन सत्य के अमृत को पाये हुए थे लेकिन भारत के इस साधु को तो अमृत बाँटते हुए देखा । मेरा जीवन सफल हो गया ।''

आज हम अपने जीवन में सनातन सत्य के अमृत को पाने की आकांक्षा नहीं रखते इसलिए हम सुविधाओं के बीच पैदा होते हैं, पलते हैं फिर भी जिंदगीभर परेशान ही रहते हैं और आखिर उस सच्चे सुख को पाये बिना मर जाते हैं, जीवन व्यर्थ गँवा देते हैं ।

धन, सौंदर्य से हम सुंदर नहीं होते वरन् सुंदर से भी सुंदर आत्मस्वरूप के करीब पहुँचने पर हम सुंदर होते हैं । जितने हम भीतर के धन से खोखले या कंगाल होते हैं उतनी बाह्य पदार्थों की गुलामी करनी पड़ती है क्योंकि सुख इन्सान की जरूरत है । जब तक हमें आत्मिक आनंद नहीं मिलता, तब तक हम विषय-वासना में सुख ढूँढ़ते हैं किंतु दुःख, परेशानी के अलावा कुछ हाथ नहीं लगता । इसके विपरीत, जितने हम भीतर के धन से सम्पन्न होते हैं, आत्मसुख से तृप्त होते हैं उतना हम बाह्य भोग-पदार्थों की ओर से बेपरवाह होते हैं ।

अष्टावक्रजी के शरीर में आठ कमियाँ थीं । छोटा कद, टेढ़ी टाँगें थीं और उम्र १२ वर्ष थी फिर भी संसार से विरक्त होकर सरकनेवाली चीजों से और मन के निर्णयों, आकर्षणों से पार हो के मुक्तिपद प्राप्त किये हुए थे तो राजा जनक उनके चरणों में प्रणाम करके उनके आगे प्रश्न करते हैं : ''भगवन् ! आत्मसुख कैसे प्राप्त होता है ?''

सनातन सत्य के सुख को पाने की जिज्ञासा हर मनुष्य में होती है परंतु सच्ची दिशा न मिलने पर वह संसार-सुख में भटक जाता है । मिथ्या जगत के नश्वर सुख में सत्यबुद्धि करके हम क्षणिक सुख प्राप्त करने में लगे रहते हैं । फिर चाहे कितने विघ्न क्यों न आयें ? पैसे कमाने के लिए न जाने क्या-क्या करना पड़ता है ? यदि धन बहुत हो गया तो शरीर में रोग घुसा होता है, किसीके माँ-बाप अचानक चल बसते हैं । जीवन है तो कुछ-कुछ आफतें आती ही रहती हैं । अरे ! भगवान स्वयं जब श्रीरामचन्द्रजी तथा श्रीकृष्ण के रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुए, तब उन्हें भी विघ्न-बाधाएँ आयी थीं किंतु फर्क है तो इतना कि हम जब विघ्न-बाधाएँ आती हैं तो उनमें बहकर

हताश-निराश हो जाते हैं जबकि संत-महापुरुष सत्यस्वरूप ईश्वर के साथ अपना सनातन संबंध जोड़े हुए होतें हैं, जिससे वे लेशमात्र भी विघ्न-बाधाओं में बहते नहीं हैं। वे निराश या हताश नहीं होते वरन् मुसीबतें उनके जीवन को चमकाने, प्रसिद्धि दिलाने एवं पूजनीय बनने का कारण बन जाती हैं। भगवान श्रीरामचन्द्रजी को १४ साल का वनवास मिला था। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म ही काल-कोठरी में हुआ था। पूतना जहर पिलाने आ गयी, कंस मामा ने लगातार कई षड्यंत्र रचे। फिर भी श्रीकृष्ण और रामजी सदैव अपने सनातन सत्यस्वरूप में प्रतिष्ठित रहे, मुस्कराते रहे। यही तो है जीव को अपने आत्मस्वरूप में जगाने का सनातन धर्म का उद्देश्य। ❐

भगवान नृसिंह का मंत्र

भगवान नृसिंह के भक्त इस मंत्र का जप करते हैं :

ॐ नमो भगवते नरसिंहाय नमस्तेजस्तेजसे आविराविर्भव वज्रनख वज्रदंष्ट्रकर्माशयान् रन्धय रन्धय तमो ग्रस ग्रस ॐ स्वाहा। अभयमभयमात्मनि भूयिष्ठाः ॐ क्ष्रौम्।

'ॐकार स्वरूप भगवान श्री नृसिंहदेव को नमस्कार है। आप अग्नि आदि तेजों के भी तेज हैं, आपको नमस्कार है। हे वज्रनख ! हे वज्रदंष्ट्र ! आप हमारे समीप प्रकट होइये, प्रकट होइये; हमारी कर्म-वासनाओं को जला डालिये, जला डालिये। हमारे अज्ञानरूप अंधकार को नष्ट कीजिये, नष्ट कीजिये। ॐ स्वाहा। हमारे अंतःकरण में अभयदान देते हुए प्रकाशित होइये। ॐ क्ष्रौम्।'

(श्रीमद् भागवत : ५.१८.८)

यह नृसिंह भगवान का मंत्र है। इस मंत्र का जप करते-करते श्रीधर स्वामी को वैराग्य हुआ था।

बापूजी जैसे संत को सताना राज्य और वंश का नाश करना है

– संत श्री बोरिया बाबा

संत बोरिया बाबा संत किन्नारामजी की परम्परा के महान संतों में से एक हैं। आपकी आयु १०० वर्ष से भी अधिक है। पूज्य बापूजी की गिरफ्तारी की खबर सुनते ही बोरिया बाबाजी ने कहा : ''**अनर्थ हो गया। इस भारतभूमि पर प्रकट व अप्रकट रूप से वर्तमान में जितने भी महान संत विचरण कर रहे हैं, बापूजी उनमें से एक हैं। संत आशारामजी बापू तो अमर हैं, उनकी तो आज भी पूजा होती है और शरीर छोड़ने के बाद तो इससे भी ज्यादा पूजा होगी किंतु जो लोग उन्हें सता रहे हैं, मुझे तो उनकी चिंता हो रही है।** मानव-शरीर पाकर संत को सताना तो मृतक की तरह जीवन व्यतीत करना है यानी जैसे कोई मृत व्यक्ति अपना भला-बुरा नहीं सोच-समझ सकता, ऐसे ही बापू को सतानेवाले लोग कर रहे हैं।

संत का दोखी अंतर ते थोथा ॥
जिउ सास बिना मिरतक की लोथा ॥

भारतभूमि देवभूमि है। अनंत ऋषि-महर्षियों ने यहाँ पर तप किया है। भगवान भी इसलिए यहाँ बार-बार अवतार लेकर आते रहते हैं। बापूजी जैसे संत को सताना...'' (बोलते-बोलते बाबाजी का हृदय भर गया, वे चुप हो गये। कुछ देर बाद वे धीरे से बोले) ''...अपने राज्य और वंश का नाश करना है। यह मैं कोई शाप नहीं दे रहा हूँ बल्कि यह शास्त्रों का वचन है।

संत का निंदकु राज ते हीनु ॥
संत का निंदकु दुखीआ अरु दीनु ॥
संत के निंदक कउ सरब रोग ॥
संत के निंदक कउ सदा बिजोग ॥''

('आदर्श पंचायती राज' मासिक पत्रिका से साभार)

मीडिया की स्वतंत्रता बन रही बेकाबू

– पत्रकार श्री अरुणेश सी. दवे

भारत में संविधान की जिस संवैधानिक तरीके से बेइज्जती की जाती है वैसा उदाहरण किसी और देश में मिलना मुश्किल है । अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मीडिया को आजादी होने का मतलब यह नहीं कि किसी भी आदमी की इज्जत तार-तार करने का हक हासिल हो गया है । फिलहाल मामला आशारामजी का है, जिन्हें 'बलात्कारी, धोखेबाज और शातिर' सिद्ध करने का अभियान हमारी मीडिया ने जोर-शोर से चलाया हुआ है । भारत के पढ़े-लिखे युवा से लेकर दिग्गज बुद्धिजीवी, मानवाधिकार के हनन के खिलाफ दिन-रात एड़ियाँ घिसनेवाले लोग भी सहर्ष सुर-से-सुर मिलाकर आशारामजी को कोसने में लगे हैं ।

ऐसा नहीं है कि आशारामजी मीडिया की इस आदत के पहले शिकार हैं । निठारी कांड के संदिग्ध रहे पंधेर को नरपिशाच के रूप में दिखाया गया था । लेकिन पुलिस जाँच पूर्ण होने पर पता चला कि वह किसी भी हत्याकांड में शामिल नहीं था । उस आदमी का पूरा जीवन आर्थिक और सामाजिक रूप से तबाह हो गया । उसे और उसके परिवार को हुई क्षति की कोई भरपाई नहीं कर सकता ।

इसी प्रकार बापूजी पर एक लड़की के यौन-शोषण का जो आरोप है, उसमें पुलिस की कार्यवाही का प्रसारण एवं पुलिस द्वारा बनाये गये केस एवं उसकी तफ्तीश के नतीजे को जनता के सामने लाना मीडिया का कर्तव्य है । लेकिन विभिन्न सूत्रों का हवाला देकर अपुष्ट तथ्य जनता के सामने पेश करना तथा आरोपी के खिलाफ जनमत तैयार करना मीडिया का काम नहीं है ।

क्या सच है, क्या नहीं यह अदालत को तय करना है । एक न्यूज चैनल 'आशारामजी द्वारा २००० बच्चियों के साथ यौन-शोषण' की खबर चला रहा था । क्या यह तथ्य पुलिस द्वारा प्रमाणित है ? क्या पुलिस को अपनी तफ्तीश के दौरान ऐसी कोई जानकारी मिली है ? इसके पहले भी आशारामजी के सेवादार के पास उनकी अश्लील क्लिपिंग मिलने का दावा चैनलों ने किया था जो कि बाद में हवा-हवाई सिद्ध हुआ ।

मीडिया को आत्मचिंतन करने की आवश्यकता है । जब कोई वर्ग 'सेल्फ रेग्युलेशन' (स्वनियंत्रण) के अधिकार का पात्र बना दिया जाता है तो उसकी नैतिक जिम्मेदारियाँ भी बहुत अधिक बढ़ जाती हैं । लेकिन दुर्भाग्यवश भारत की न्यायपालिका, विधायिका, कार्यपालिका और मीडिया - चारों स्तम्भ बहुत तेजी से अपना सम्मान खोते जा रहे हैं । किसी भी लोकतांत्रिक राष्ट्र के लिए यह स्थिति बेहद चिंताजनक है । ❑

श्रद्धा तोड़ने की साजिश है

– डॉ. अशोक ठाकुर, असिस्टेंट प्रोफेसर, एम.जी.एम. मेडिकल कॉलेज, इंदौर

संतों के खिलाफ हो रहे षड्यंत्रों से संतों का उतना नुकसान नहीं होता जितना जनता का होता है । संतों की बदनामी हमारी महान संत-परम्परा में श्रद्धा तोड़ने की साजिश है । इससे हमको, हमारे परिवार, समाज, राष्ट्र ही नहीं अपितु समस्त विश्व को भारी क्षति होगी । अतः हम सभीको जागरूक रहकर अपने-आपको व समाज को इस षड्यंत्र से बचाना होगा ।

बापूजी को जेल क्यों ?

– वरिष्ठ पत्रकार हबीब खान

आज हर समाचार चैनल अपनी टीआरपी बढ़ाने के चक्कर में सुबह से लेकर रात तक आशारामजी बापू के नाम का ही झुनझुना बजा रहा है। लेकिन देश की कई महत्त्वपूर्ण समस्याओं से संबंधित समाचारों का 'ब्लैक आउट' (बिल्कुल गायब किया जाना) आखिर क्यों ? बड़े-बड़े नेताओं को देश-विदेश के न्यायालयों द्वारा समन्स और नोटिस जारी होने की खबरें मीडिया से ब्लैक आउट क्यों रहीं ?

आशारामजी बापू की गिरफ्तारी कुछ और नहीं एक पूर्वनियोजित षड्यंत्र है। गिरफ्तारी के बाद आरोप लगानेवाली लड़की की सहेली का बयान 'पी७' न्यूज चैनल पर दिखाया गया कि 'मेरी सहेली का कहना है कि मेरे से जैसा बुलवाते हैं, वैसा मैं बोलती हूँ।' और लड़की की शिकायत के आधार पर दर्ज पुलिस एफआईआर में बलात्कार का आरोप नहीं है। इस विषय में 'इंडिया टीवी' न्यूज चैनल पर दिखाया गया जोधपुर पुलिस के डीसीपी अजय पाल लाम्बा का बयान है कि 'एफआईआर में बच्ची ने ३७६ (बलात्कार) का आरोप नहीं लगाया है। हम बार-बार यह कह रहे हैं कि मेडिकल रिपोर्ट जो दिल्ली से आयी है उसमें भी किसी भी तरह से ३७६ के आरोप के पक्ष में कोई सबूत नहीं है।' मेडिकल रिपोर्ट में भी लड़की पवित्र है, फिर भी बापूजी को जेल क्यों ? बापूजी के सेवादार शिवाभाई को बापू की फर्जी सेक्स सीडी की बात कबुलवाने के लिए तीसरी डिग्री के रिमांड का इस्तेमाल करके पुलिस का उन पर खूब दबाव देना, एक के बाद दूसरा आरोप लगना - क्या यह षड्यंत्र नहीं है ? आशारामजी बापू की गिरफ्तारी कुछ और नहीं, निशाना है २०१४ की चुनावी रणनीति का कि 'जनता के दिलो-दिमाग में साधु-संतों के विरुद्ध इतना जहर भर दो कि चुनावों में जनता साधु-संतों पर विश्वास न करे।' आखिर मीडिया और सरकार केवल हिन्दुओं के ही विरुद्ध इतने बलशाली क्यों हो जाते हैं ? क्या अन्य धर्माचार्यों पर कोई आरोप नहीं लगते ? उनको गिरफ्तार करने की न सरकार में ताकत है और न ही मीडिया में उन पर चर्चा करने की हिम्मत।

मीडिया की आँखें तब भी नहीं खुलीं जब स्वामी नित्यानंदजी के फर्जी सेक्स सीडी मामले से संबंधित आपत्तिजनक खबरों के प्रसारण के संदर्भ में २ सितम्बर २०१३ को 'ब्रॉडकास्ट कंटेंट कम्प्लेंट्स काउंसिल' ने 'स्टार विजय' चैनल को लगातार ७ दिनों तक हर २ घंटे में माफीनामा चलाने का आदेश दिया था, 'आज तक' न्यूज चैनल को भी दो बार माफीनामा प्रसारित करना पड़ा।

वास्तव में आशारामजी बापू के विरुद्ध न ही बलात्कार का मामला है और न ही किसी प्रकार के यौन-शोषण का। आशारामजी बापू एक सफल योजना के तहत विश्वव्यापी स्तर पर विरोध कर रहे थे हिन्दुओं के धर्मांतरण का। इसी प्रकार हिन्दुओं के श्रद्धेय शंकराचार्य को गिरफ्तार किया गया था, उन पर आरोप था खून का। शंकराचार्यजी भी धर्मांतरण का विरोध अपने स्तर पर कर रहे थे। उस समय भी मीडिया में अनर्गल बकवास, चर्चाएँ होती थीं लेकिन जब

वे निर्दोष सिद्ध हुए तो किसी भी चैनल ने माफी तक नहीं माँगी।

वास्तविकता यही है कि जो भी ईसाई मिशनरियों द्वारा चलाये जा रहे धर्मांतरण में रुकावट बनेंगे, सरकार उन्हें जनता में जलील करने का काम करती रहेगी और मीडिया कंधे-से-कंधा मिलाकर हिन्दू-विरोधियों का साथ देता रहेगा।

साध्वी प्रज्ञा सिंह और स्वामी असीमानंद को इतने वर्षों से जेलों में यातनाएँ दे रहे थे लेकिन आरोप आज तक सिद्ध नहीं कर पाये। आतंकवादियों को उनकी पसंद का खाना परोसा जा रहा है और साध्वी प्रज्ञा के भोजन में अंडा मिलाकर उनकी सात्त्विकता को अपमानित करने का कौन-सा कानून है, कौन-सी राजनीति है ?

उन पत्रकारों को धन्यवाद है जो जनता की आँखें खोलने के लिए ऐसे पक्ष को भी जनता के सामने रखते हैं जो प्रायः अधिकांश मीडिया द्वारा ब्लैक आउट कर दिये जाते हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि जब ६ सितम्बर को एक न्यूज चैनल ने आशारामजी बापू के विषय पर चर्चा में एक वरिष्ठ पत्रकार को भी बुला लिया। मेहमान पत्रकार ने पूछा कि 'फलाने नेता की सेक्स विडियो जब सभी चैनलों को भेजी गयी थी तो उसे दिखाने की क्या किसीकी हिम्मत हुई ? तब कहाँ गयी थी तुम्हारी पत्रकारिता ? जब अन्य धर्मों में पनप रहे अपराधों की बात आती है तब क्यों नहीं खुलता तुम्हारा मुँह ?'

कहते हैं, 'आशाराम बापू - बलात्कारी, स्वामी नित्यानंद - सेक्स स्कैंडलवाले, जयेन्द्र सरस्वतीजी - हत्यारे, साध्वी प्रज्ञा और स्वामी असीमानंद - आतंकवादी' यानी जो साधु-संत धर्मांतरण और काले धन पर बोलेगा, इसी तरह अपमानित होता रहेगा।

आशारामजी बापू के खिलाफ साजिश की योजना का पर्दाफाश शीघ्रातिशीघ्र होना चाहिए और जनता से अपील है कि वे सत्य उजागर करनेवाले न्यूज चैनल जैसे 'ए२जेड', 'सुदर्शन' आदि ही देखें, जिससे बिकाऊ, देशद्रोही, भ्रष्ट मीडिया को टीआरपी बढ़ाने का अवसर न मिल सके। ❐

'राज्य महिला आयोग' को नहीं मिली आशारामजी बापू के खिलाफ कोई शिकायत

दैनिक जागरण, नई दिल्ली । 'गुजरात महिला आयोग' की अध्यक्षा लीला बहन अंकोलिया के नेतृत्व में एक महिला पुलिस अफसर और जाँच दल ने आशारामजी बापू के मोटेरा (अहमदाबाद) स्थित महिला आश्रम का दौरा किया। एसआईटी आयोग की टीम ने सभी महिलाओं से एक-एक करके अकेले में पूछताछ की और यह जानने की कोशिश की कि कहीं कोई महिला आशाराम बापू के द्वारा प्रताड़ित तो नहीं की गयी है। लेकिन आयोग को कोई भी शिकायत नहीं मिली।

उल्लेखनीय है कि आश्रम से निकाले गये कुछ गद्दारों ने अपनी गंदी जुबान से जो मनगढ़ंत, कल्पित कहानियाँ रचीं, उन्हें पुख्ता सबूतों के तौर पर पेश कर मीडिया ने कई स्टोरियाँ रचीं और खुद भी मनगढ़ंत आरोप-पर-आरोप लगाये। लेकिन कहते हैं न कि **'साँच को आँच नहीं। सत्यमेव जयते।' 'गुजरात महिला आयोग' की जाँच में जो सत्य सामने आया, उसने अनर्गल, झूठे आरोप लगानेवाले अमृत प्रजापति, महेन्द्र चावला तथा उन्हींके आरोपों को दोहरानेवाले मीडिया की पोल खोलकर रख दी है।** ❐
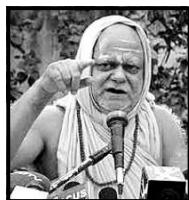
हिन्दू आस्था पर कुठाराघात का राजनैतिक षड्यंत्र

– जगन्नाथपुरी मठ के जगद्गुरु शंकराचार्य श्री निश्चलानंद सरस्वतीजी

राजनैतिक षड्यंत्र के तहत ही हिन्दू आस्था, हिन्दू मानबिंदुओं व हिन्दू संतों पर कुठाराघात किया जा रहा है । दिशाहीन राजनीति के चलते देश समस्याओं से जूझ रहा है । मठ-मंदिरों में सरकार कब्जा जमाने का प्रयास कर रही है । सरकार अपने राजनैतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए अब हिन्दू संतों को अपना निशाना बना रही है । संत आशारामजी बापू के मामले में जल्द ही दूध-का-दूध और पानी-का-पानी हो जायेगा ।

संत-सम्मेलन, अदिलाबाद

श्री अरविंद शास्त्रीजी, वृंदावन : पूज्य बापूजी जैसे संत दुनिया का कल्याण करने के लिए धरा पर आते हैं । संतों की सुरक्षा के लिए साधक-समाज को एकत्रित होना चाहिए । हम लोग भी बापूजी के साथ हैं ।

श्री चेतन जनार्दन, हिन्दू जनजागृति समिति, आंध्र प्रदेश : धर्म का प्रचार करने के लिए तथा भारतीय संस्कृति को टिका के रखने के लिए परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापू की ओर से बहुत बड़े पैमाने पर आज प्रचार हो रहा है । ऐसे महान कार्य में जुड़े हुए पूज्य बापूजी का आज जो कुप्रचार हो रहा है, इसके सामने खड़े होकर विरोध करना सभी हिन्दू संगठनों का धर्म व कर्तव्य है । इस तरह का कुप्रचार सिर्फ बापूजी का ही नहीं बल्कि बहुत सालों से संत-महात्माओं का होता आ रहा है । अगर हम इसका विरोध नहीं करेंगे तो कल हमारे संगठनों के ऊपर भी इसी प्रकार की बाधाएँ निर्मित होंगी ।

आज हमारी संस्कृति और धर्म को नष्ट करने का अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र रचा जा रहा है । हमें मुक्ति का मार्ग दिखानेवाले संत के ऊपर आज षड्यंत्र रचा गया है तो आज हमें संगठित होकर लड़ना चाहिए ।

श्री गणेश महाराज : धर्म के मूल संत हैं । संतों पर प्रहार पूरे धर्म पर प्रहार है । जहाँ सत्य है वहाँ विजय निश्चित है । जो लोग इल्जाम लगा रहे हैं वे बदनाम करने के लिए लगा रहे हैं लेकिन बापूजी तो निर्विकार हैं । हम सब एकजुट रहेंगे । हमारी आस्था व श्रद्धा को नष्ट नहीं करेंगे । ऐसे ही प्रचार-प्रसार करते रहेंगे ।

श्री योगानंद सरस्वतीजी महाराज : दुनिया में बापूजी की बराबरी कोई नहीं कर सकता । उनके जो लोक-मांगल्य के कार्य दुनिया में चल रहे हैं, वे बेमिसाल हैं ।

भारत कुमार शर्मा, सीईओ, डायरेक्टर, मुक्ति टीवी (आंध्र प्रदेश) : संत-महात्माओं पर यह प्रहार धर्मांतरणवालों के द्वारा हो रहा है । वास्तव में यह प्रहार हमारे धर्म, संस्कृति और देश पर है । इसे अपने घर पर हुआ प्रहार समझकर सभीको एकजुट होकर इसका प्रतिकार करना है ।

यह षड्यंत्र आतंकवादी हमले से भी बड़ा हमला है

– श्री मुत्यम्‌जी, रा. स्व. संघ जिला प्रचारक, अदिलाबाद

पिछले ५० वर्षों से हमारे देश के पूरे समाज को मार्गदर्शन देनेवाले परम गुरु, आत्मसाक्षात्कारी महापुरुष संत श्री आशारामजी बापू के ऊपर झूठा आरोप षड्यंत्रकारियों ने लगाया है, जिससे पूरे समाज के लोग दुःखी और चिंतित हो गये हैं । यह आतंकवादी हमले से भी कई गुना बड़ा हमला है । हमारे देश के गौरव तो संत-महात्मा ही हैं, जिनसे पूरा विश्व भारत के सामने नतमस्तक हो जाता है । ❒

संत आशारामजी बापू अवतारी महापुरुष हैं

– महंत बालकानंदजी महाराज, मथुरा

संत आशारामजी बापू लगातार पिछले ५० वर्षों से पूरे देश में घूम-घूमकर अपने सत्संग व समाजसेवा के माध्यम से भारत की सनातन संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं तथा सच्चा व सीधा-सादा जीवन व्यतीत करते हुए भी जीवन में परम आनंद व प्रसन्नता प्राप्त करते हुए समाज को मनुष्य-जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करने की वैदिक कला सिखा रहे हैं। इस प्रकार संत बापूजी भारत में धर्मांतरण के कार्यों में सबसे बड़ी बाधा बन रहे हैं और इसी कारण से धर्मांतरणवालों के टारगेट नम्बर एक बरसों से रहे हैं।

संत आशारामजी बापू अवतारी महापुरुष हैं। वे अजर-अमर तत्त्व में विराजमान हैं। इतिहास गवाह है कि ऐसे महापुरुषों को आसुरी शक्तियों का आक्रमण झेलना ही पड़ता है। महात्मा बुद्ध, संत कबीरजी जैसे उदाहरणों से इतिहास भरा पड़ा है। किंतु उन संतों की पूजा तो आज भी हो रही है; उनको सतानेवाली शक्तियाँ कहाँ हैं, किन योनियों में भटक रही हैं भगवान ही जानें। पाप का अंत अवश्यंभावी है। ❐

बापूजी पर हो रहे अत्याचार मुगलों द्वारा किये जुल्मों की याद दिलाते हैं

– सरदार मोहिंदर सिंह

मुझे जवानी से ही शराब पीने की आदत लग गयी थी। सुबह होते ही मैं पीने बैठ जाता था। एक बार पानीपत में बापूजी का सत्संग था। मेरे पूरे परिवार ने जोर देकर मुझे वहाँ भेज दिया। उन्होंने सुना था कि बापूजी ने हजारों लोगों के नशे बिल्कुल छुड़वा दिये हैं। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। बापूजी के दर्शन-सत्संग से मेरा जीवन बदल गया। फिर मैंने जीवन में कभी शराब को हाथ तक नहीं लगाया। यह एक ऐसा चमत्कार था जिसकी नींव पर ही आज हमारे परिवार का निर्माण हो सका है।

पूज्य बापूजी पर हो रहे अत्याचार को देख-सुनकर तो मुझे मुगलों द्वारा किये गये जुल्मों की याद आती है। एक सेवादार शिवाभाई की चोटी उखाड़ देना, बापूजी को पूजा का सामान व गंगाजल न देना, ओढ़ने-बिछाने के लिए बिस्तर न देना, मच्छरदानी न देना, आयुर्वेदिक चिकित्सा उपलब्ध न कराना, ७४ वर्षीय संत को १०-१० घंटों तक कष्टदायक यात्रा करवाना... ऐसा बापूजी ने क्या कर दिया है ? अभी तो उन पर आरोप ही लगाये हैं जबकि उत्तर प्रदेश की लड़की की डॉक्टरी रिपोर्ट बलात्कार के आरोपों को झूठा साबित कर रही है। फिर भी इतने बड़े संत पर ऐसे जुल्म और अत्याचार !! मैं तो आज 'सुखमनी साहिब' का पाठ करते हुए यही सोच रहा था कि इन लोगों को कौन-से नरकों में जगह मिलेगी ? और इन टीवी चैनलवालों ने तो हद ही कर दी है। एक नया चैनल खुला है, जिस पर पनवाड़ी जैसे नाम व शक्लवाला एक बंदा तो सबसे ज्यादा बकवास करता है। बाद में पता चला कि यह चैनल हरियाणा के किसी नेता का है, जिसका बड़ा लड़का एक कन्या की हत्या में उम्रकैद भुगत रहा है।

मोहिंदरजी की धर्मपत्नी जतिंदर कौर ने कहा : ''सचमुच, पूज्य बापूजी जिन्होंने हमारा सारा जीवन बदल दिया है, वे तो हमारे लिए भगवान हैं। उन्हें सतानेवाले षड्यंत्रकारियों को शीघ्रातिशीघ्र दंड मिलना चाहिए।''

('आदर्श पंचायती राज' पत्रिका से साभार) ❐

हम सब एकजुट होकर इस षड्यंत्र का सामना करें

– आचार्य बालकृष्ण

हम जानते हैं कि हमारे सामने, बापूजी के सामने एक समस्या विकराल रूप में खड़ी है । निश्चित रूप से जो भारतीय संस्कृति, परम्परा के प्रति रुचि या निष्ठा रखनेवाले हैं, वे समझते हैं कि सच्चाई क्या है और बापूजी के विरुद्ध में षड्यंत्र कितना है । तो हमें भी सच्चाई और षड्यंत्र को समझने का प्रयास करना चाहिए । हमारी परम्परा बहुत उदारतापूर्ण रही है और हमारी संस्कृति से जुड़े हुए सामान्य लोगों ने भी कभी किसीको न तो पीड़ा दी, न उनको सताया तो उनके जो मार्गदर्शक हैं, पथप्रदर्शक हैं उनके द्वारा किसीको पीड़ा दिया जाना - ऐसा कैसे हो सकता है ! जो साधु-संत हैं वे तो कभी भी समाज के अहित का नहीं सोचते हैं परंतु जब वे समाज का हित करते हैं तो बहुत सारे ऐसे तत्त्व हैं जिनको वह रास नहीं आता है । हमारे समाज, हिन्दू संस्कृति की परम्पराओं, मूल्यों और आदर्शों का उत्थान होता हुआ शायद वे आसुरी शक्तियाँ देखना नहीं चाहती हैं और ऐसी शक्तियाँ विभिन्न तरह के षड्यंत्र करती हैं । षड्यंत्र करने के लिए वे एक-एक संत को चुन के शरारतपूर्ण हरकतें करती हैं । इसके लिए जरूरी है कि हम संगठनात्मक रूप से एक हों क्योंकि उस संगठन को भेदने की शक्ति उन दुष्प्रचारकों और आसुरी शक्तियों में कभी भी नहीं होती । इसलिए आज समय आ गया है कि हम सभी, हमारी सनातन वैदिक हिन्दू परम्परा से जुड़ी जितनी भी संस्थाएँ और संगठन हैं, जितने भी साधु-महात्मा हैं वे सब एकजुट हों और इस तरह के जितने भी षड्यंत्र हैं, उनके विरुद्ध ललकारने के सामर्थ्य से मैदान में उतरें तथा सुनियोजित ढंग से उनको चुनौती देते हुए इस दुष्प्रचार की काट करें । ❒

लड़की की कहानी विश्वास करने योग्य नहीं है

– सुप्रसिद्ध वरिष्ठ अधिवक्ता एवं न्यायविद् श्री राम जेठमलानी

संत श्री आशारामजी बापू पर किया गया केस झूठा है, लड़की को कुछ नहीं हुआ । यह असम्भव है कि उस कमरे में लड़की को कुछ हुआ हो । जैसा कि लड़की दावा कर रही है, जब उस रात ३ लड़के कमरे के बाहर बैठे थे और लड़की की माँ भी बैठी थी, उसी समय डेढ़ घंटे तक घटना घटी और माँ साथ थी, आयी थी देखने के लिए कि क्या हो रहा है और उसने कुछ नहीं सुना ! यह कैसे सम्भव है ?

लड़की कमरे के बाहर आयी और माँ से मिली । दोनों साथ गयीं और लड़की के पिता से मिलीं । सभी फार्म के मालिक से मिले, उनके साथ रात को खाना खाया, सारी रात वे वहीं रुके । सुबह उनके साथ नाश्ता किया । फिर फार्म के मालिक ने (स्टेशन छोड़ने हेतु) कार की व्यवस्था की और तब तक किसीसे कोई भी शिकायत नहीं की गयी ।

इन तथ्यों के आधार पर स्पष्ट होता है कि पूज्य बापूजी सही हैं और लड़की की कहानी विश्वास करने योग्य नहीं है ।

मैं न्यायालय को समझाने की कोशिश कर रहा हूँ कि बापूजी को जमानत दी जानी चाहिए ताकि वे आगे के सबूत एकत्र कर सकें कि यह झूठा केस क्यों बनाया गया है । हमें कुछ सबूत मिले हैं पर अभी भी कुछ और सबूतों की जरूरत है क्योंकि जब मैं बापूजी के अनुयायियों से मिला तो उन्होंने खबर दी कि एफआईआर लिखवाने से पहले लड़की और उसके माता-पिता ऐसे कुछ राजनेताओं से मिले थे जो बापूजी से शत्रुता रखते हैं ।

यह केस किसी भी तरह से खत्म नहीं हुआ है और अभियुक्त का बचाव विश्वसनीय है । हमको और बापूजी के अनुयायियों को भगवान से अवश्य प्रार्थना करनी चाहिए कि अभियोक्ता इस अभियोग की मूर्खता देख सकें । ❒

पूज्य बापूजी व उनके परिवार पर आरोप एक काल्पनिक कहानी है

- वरिष्ठ अधिवक्ता श्री बी. एम. गुप्ता

पूज्य बापूजी के खिलाफ की गयी शिकायतों में ऐसा कोई सचोट आधारभूत कानूनी प्रमाण नहीं है, मात्र आरोप हैं। ५० वर्षों में भारतवर्ष की १२५ करोड़ बस्ती में से १०-२० लोग उठकर आरोप लगायें तो इसकी कोई कीमत नहीं गिनी जाती।

जब भी कोई शिकायत दर्ज हो तो पुलिस का कानूनी कर्तव्य है कि उसकी प्राथमिक जाँच करे। उसमें प्रथम दृष्ट्या सबूत मिलें तो गुनाह दर्ज करना चाहिए। यह अन्य अदालतों का भी निर्णय है। लेकिन इस केस में कोई भी प्राथमिक पूछताछ किये बिना सीधे गुनाह दर्ज हुआ है। यह कानून की तौहीन है।

केस बनता है तो पहले आरोपी को बुलाकर उनका स्पष्टीकरण लेना पड़ता है कि इस सबूत के बारे में आपका क्या कहना है। यह होने के बाद यदि ऐसा लगे कि आरोपी का स्पष्टीकरण ठीक नहीं है तो उसे गिरफ्तार करने का प्रश्न खड़ा होता है। तब तक कानूनी तौर पर किसीको गिरफ्तार नहीं किया जा सकता। लेकिन खाकी वर्दी का उपयोग करके पुलिस रास्ते जाते हुए आदमी को भी गिरफ्तार कर सकती है। आप जाँच करो। 'आरोपी भगेड़ू है, भाग गया...' यह क्या है ? कहाँ भागे हैं ? कोई भागा नहीं है। शिकायतकर्ता की जिम्मेदारी है उनका केस साबित करने की, आरोपी की नहीं।

रेप के मामले में कोई प्रत्यक्षदर्शी गवाह नहीं होता। परिस्थितिजन्य सबूत के ऊपर यह केस आधारित होता है। इसमें चिकित्सकीय प्रमाण जरूरी है और वह सूरत की दो बहनों के किस्से में मिलेगा नहीं। दूसरा, शिकायतकर्त्री तथाकथित घटना के बाद सात साल तक आश्रम में रही है। जब उसके साथ उसकी मर्जी के विरुद्ध सात वर्ष तक ऐसी कथित घटना घटी तो वह सात साल तक आश्रम में क्यों रही ? यह बड़ा प्रश्न है। इसके अलावा वह एक वक्ता थी। अनेक राज्यों में वक्तव्य देने के लिए गयी थी। उसने किसी भी जगह इस घटना का उल्लेख नहीं किया और न किसीके भी साथ इस घटना के बारे में बात की। और आखिर १२ साल के बाद जोधपुर की कथित घटना खड़ी हुई तो उसके बाद इसने बोलना शुरू किया। यही तथ्य बताता है कि यह काल्पनिक कहानी है, इसके सिवाय कुछ नहीं।

प्रश्न : मुख्य सरकारी वकील सुखड़वाला का कहना है कि नारायण साँईं की एफिडेविट पर उनके डुप्लिकेट हस्ताक्षर हैं।

गुप्ताजी : सरकारी वकील को क्या पता कि उनके हस्ताक्षर नहीं हैं ! सरकारी वकील के पास उनके मूल हस्ताक्षर हैं ? उसने कम्पेअर किये हैं ? ये सब झूठे आरोप हैं। यह नारायण साँईं या उनके परिवार के सदस्य ही कह सकते हैं कि ये उनके हस्ताक्षर हैं या नहीं। तीसरा व्यक्ति किस तरह कह सकता है कि ये उनके हस्ताक्षर नहीं हैं ?

पुलिस पूछताछ में क्या कार्यवाही होती है उसकी कोई भी जानकारी किसीको भी नहीं मिल सकती। इसलिए अभी जो भी प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में आ रहा है, जो प्रचारित हो रहा है, वह सब भ्रामक है, सब कल्पनाएँ हैं।

प्रश्न : इतने दिन की रिमांड में पुलिस उनसे कौन-कौनसी महत्त्वपूर्ण बातें बाहर निकलवा सकी है ? **(शेष पृष्ठ २२ पर)**

आरोप बनावटी हैं

– वकील श्री गौतम देसाई

एक मुद्दा है कि १० साल के बाद यह एफआईआर की गयी है। कोई भी रेप केस हो तो उसमें मेडिकल सबूत बहुत जरूरी होता है। पहला सवाल तो यह है कि १० साल तक वह क्यों चुप बैठी ? दूसरी बात, १० साल के बाद जब उसने एफआईआर की है तो मेडिकल सबूत तो जीरो ही होनेवाला है। मेरा मानना है कि ऐसी स्थिति में जाँच एजेंसी द्वारा इस केस की अच्छी तरह से छानबीन होने के बाद ही धर-पकड़ वॉरंट या कुछ जारी होना चाहिए। इस केस में ऐसा कुछ हुआ नहीं है।

मीडिया का रुख ऐसा है कि लोगों तक जो केस की सच्चाई जानी चाहिए, उसमें बहुत रुकावट आ रही है लेकिन जीत तो कभी भी सच्चाई की ही होती है। ये सब आरोप गलत तरीके से एफआईआर दाखिल करने के लिए उपजाये हुए हैं, बनावटी हैं।

उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय के बहुत सारे निर्णय हैं कि जब एफआईआर में देरी होती है तो उस देरी का स्पष्टीकरण देने की जवाबदारी फरियादी की या जाँच एजेंसी की होती है लेकिन इस एफआईआर में कहीं भी उसने अच्छी तरह से इस बात को स्पष्ट नहीं किया है। ❑

धर्मगुरुओं के कुप्रचार का विरोध और धर्म की रक्षा करो

– महंत सुरेन्द्रगिरिजी महाराज,
मठ-मंदिर सलाहकार समिति, म.प्र. शासन

गत कुछ वर्षों से हिन्दू धर्मगुरुओं तथा धर्माचार्यों को अपमानित और बदनाम करने का लगातार प्रयास चल रहा है। पहले दिल्ली एयरपोर्ट पर स्वामी नरेन्द्र महाराज को अपमानित किया, फिर स्वामी नित्यानंदजी को राष्ट्रीय स्तर पर बदनाम किया गया और फिर हमारे जगद्गुरु शंकराचार्यजी को हत्या के आरोप में प्रताड़ित व बदनाम किया गया लेकिन बाद में उन्हें ससम्मान रिहा करना पड़ा। उसी प्रकार धर्मांतरण पर सतत चिंतन करनेवाले राष्ट्रीय संत, जिनके करोड़ों अनुयायी देश-विदेश में रहते हैं, ऐसे संत श्री आशारामजी बापू को षड्यंत्रकारी बदनाम कर रहे हैं। हमारे देश में आतंकवादी, हत्यारों को तो जेल में वीआईपी सुविधा दी जा रही है लेकिन साध्वी प्रज्ञा सिंह और संत श्री आशारामजी बापू जैसे संतों को बहुत परेशान किया जा रहा है। नाना प्रकार के षड्यंत्र रचकर उन्हें बदनाम किया जा रहा है। अतः हिन्दू धर्म प्रेमी भाई-बहनो ! ऐसे गलत प्रचार करनेवालों के बहकावे में न आयें। अपने धर्म की रक्षा और अपने धर्मगुरुओं के खिलाफ किये गये कुप्रचार का घोर विरोध करें। ❑

(पृष्ठ २१ से 'पूज्य बापूजी व उनके परिवार पर आरोप एक काल्पनिक कहानी है' का शेष)

गुप्ताजी : पुलिस कुछ भी नहीं निकलवा पायी और कुछ निकलवा भी नहीं पायेगी। यह हकीकत है। इसलिए तो बार-बार रिमांड माँग रही है। और मैं कहता हूँ कि १० दिन की रिमांड माँग रही है तो १० दिन की दे दो। तो क्यों नहीं देते ?

(नारायण साँईं के केस के बारे में आगे कहते हैं)

कानून के निष्णात के नाते मैं बताता हूँ कि हर एक आरोपी को अपना सम्पूर्ण बचाव करने का अधिकार है और इस अधिकार पर कोई रोक नहीं लगा सकता। और कोई टिप्पणी नहीं कर सकता है कि 'निर्दोष हो तो हाजिर हो जाओ।' क्यों हाजिर हों वे अपने सभी अधिकारों का उपयोग करेंगे। ❑

हमें असलियत पता है

पूज्य बापूजी पर जो आरोप लगे हैं, वे सब झूठे और निराधार हैं। मैं २७ साल से और मेरे माता-पिता उससे भी पहले से बापूजी के पास जा रहे हैं। यदि कुछ गलत होता तो इतने सालों में हमने वहाँ पर कुछ-न-कुछ तो देखा होता।

मैं इंजीनियर हूँ, मेरे पापा भी बैंक में नौकरी करते हैं, मेरे भाई भी इंजीनियर हैं। करोड़ों पढ़े-लिखे लोग पूज्य बापूजी के शिष्य हैं। वे सब अंधश्रद्धा के शिकार नहीं हो सकते हैं। इतना कुप्रचार हुआ फिर भी हम बापूजी के पास जाते हैं क्योंकि हमको पता है कि असलियत क्या है।

मीडिया से अनुरोध है कि आप न्यूज बताइये लेकिन सच्चाई का भी खयाल रखिये, जिससे आपका भी विश्वास जनता में बना रहे।

– जय कुमार दलवाड़ी,
सिलीकॉन वैली इंजीनियर, अमेरिका

आगे आयें और अपनी आवाज समाज तक पहुँचायें

कुछ लोग जो आज पूज्य बापूजी के ऊपर लांछन लगा रहे हैं और झूठे इल्जाम लगा रहे हैं, यह बहुत ही शर्मनाक है, उनको जरा तो शर्म करनी चाहिए ! बापूजी के ऊपर आज झूठे इल्जाम इसलिए लगाये जा रहे हैं क्योंकि कुछ ऐसे लोग हैं जो उनकी सीख से खुश नहीं हैं। वे नहीं चाहते हैं कि भारतीय लोग अपनी परम्परा और संस्कृति बनाये रखें। सब लोग इसी तरह से चुप बैठेंगे तो एक दिन ऐसा आयेगा कि मीडिया हम लोगों को, हमारे परिवारवालों को भी नहीं छोड़ेगी क्योंकि षड्यंत्रकारी यही चाहते हैं कि हमारी संस्कृति, परम्परा खत्म हो जाय और विदेशी सब चीजें यहाँ आ जायें। वे चाहते ही हैं कि हमारे ऊपर वे हावी हो जायें।

हमें चाहिए कि हम आगे आयें और अपनी आवाज समाज तक पहुँचायें, न कि सिर्फ चुप बैठें। और जैसे भी हो सके, हमें अब निर्दोष, निरपराध बापूजी की निष्कलंकता को साबित करने के लिए जो कुछ भी हम अपनी तरफ से कर सकते हैं, हमें योगदान देना चाहिए। **– निशिकांत गुंजाल**
आई.टी. प्रोजेक्ट मैनेजर, अमेरिका

हिन्दू धर्म को बदनाम करने का दुष्प्रयत्न

मैं अपने दिल की गहराइयों से जानता हूँ कि बापूजी सच्चे संत हैं और उनके खिलाफ जो षड्यंत्र चल रहा है यह भारत की संस्कृति को बदनाम करने का दुष्प्रयत्न है। अतः हमें मिलकर कुछ मीडिया और कुछ राजनेताओं द्वारा हो रहे हिन्दुत्व और महान संतों के खिलाफ बुरे एवं क्षतिवर्धक इरादों को नाकाम करना चाहिए।

– संजय त्यागी, एसोसिएट डायरेक्टर,
बिजनेस कन्सल्टिंग, बोस्टन, यू.एस.ए.

यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण बात है

संत आशारामजी बापू ने वेदों के ज्ञान और अपनी अनोखी शैली से समाज को जाग्रत किया है। इसलिए उनके खिलाफ ऐसा षड्यंत्र रचा जा रहा है ताकि उनके श्रद्धालु उनसे मुँह मोड़ लें। दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि कई मीडिया एजेंसियाँ, कुछ राजनेता और कुछ व्यक्ति जिनके पास सत्ता है, वे इसमें बहुत मुख्य भूमिका निभा रहे हैं, षड्यंत्रकारियों की इस योजना को कार्यान्वित कर रहे हैं।

– अनिल हिंगोरानी, आईटी प्रोफेशन ❑

बापूजी ने बनाया सच्चा इन्सान

– भुट्टो खानजी, अलीगढ़ (उ.प्र.)

मैं १० साल पहले किसी पीर, फकीर या साधु-संत को नहीं मानता था । बचपन से ही मैं पूरी तरह से व्यसनों में डूबा था । गंदी फिल्में देखना, शराब आदि का नशा करना, मांसाहार, बाजारू औरतों के पास जाना आदि तमाम गंदी आदतों में पूरी तरह लिप्त था, जिससे शरीर रोगों का घर बन गया था । जीवन में बहुत अशांति थी । खुदा की रहमत से एक दिन सुबह सोनी टीवी पर पूज्य संत श्री आशारामजी बापू को देखा । उनका सत्संग सुनने के बाद मुझे एहसास हुआ कि 'ये बाबा सच्चे औलिया, फकीर हैं ।' उस दिन से मैंने ठान लिया कि 'ये ही मेरे सच्चे मुर्शिद (गुरु) हैं, मैं इनका मुरीद (शिष्य) बनूँगा ।' २००२ में अलीगढ़ में पूज्य बापूजी से दीक्षा मिली । दीक्षा के बाद मेरे सारे ऐब कहाँ चले गये, पता भी नहीं चला !

मेरे सच्चे फकीर मुर्शिद ने रहमत कर मुझ जैसे हैवान को भी इन्सान बना दिया । मैं ही नहीं मेरे जैसे करोड़ों भक्तों को व्यसन और वासनाओं से मुक्ति मिली, जीवन जीने का सलीका मिला । मेरी बीबी शबनम बेगम अहमदाबाद महिला आश्रम में गयी और साधिका बहनों के साथ ३ दिन रही तो उसके जीवन में भी अद्‌भुत परिवर्तन हुए । उसमें संयम, सदाचार के सद्‌गुण बढ़ गये ।

बापूजी तो सत्य, सदाचार, संयम और ब्रह्म का साकार रूप हैं । उनके ऊपर कुछ संस्कृतिविरोधी, चरित्रहीन लोग मनगढ़ंत, निहायत ही गंदे, झूठे और घिनौने आरोप लगा रहे हैं, जो संतों को बदनाम करने की एक गहरी साजिश है । आये दिन कुछ बिकाऊ चैनल अनर्गल बातें बकते हैं और आश्रम से निकाले गये ४-५ गुरुद्रोहियों तथा नकट्टियों को कैमरे के सामने बिठाकर बकवाते हैं, जो समाज और राष्ट्र हित में नहीं है ।

हम हमारे विश्वास को टूटने न दें

– अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त जादूगर आँचल, उदयपुर (राज.)

पूज्य बापूजी लोगों का भला करते हैं, सही मार्गदर्शन देते हैं । जब से मैंने बापूजी से दीक्षा ली, उसके बाद मेरी जिंदगी में कई चमत्कार हुए हैं । एक बार तो मेरा भयंकर एक्सीडेंट हुआ था, तब हम लोग मौत के मुँह से निकले तो सिर्फ बापूजी के दिये मंत्र के जप व पूजा की वजह से ।

आज हिन्दुस्तान में सबसे बड़े आध्यात्मिक गुरु परम पूज्य आशारामजी बापू हैं, उनके भक्त करोड़ों की संख्या में हैं । जो लोग हिन्दुस्तान की तरक्की से जलते हैं, उन्हें लगता है कि इस देश को ऊँचा उठाने के लिए परिश्रम करनेवाले पूज्य बापूजी जैसे संतों के प्रति लोगों के विश्वास को भंग करके हिन्दुस्तान की तरक्की को रोका जा सकता है । इसीलिए बापूजी को सुनियोजित तरीके से फँसाया जा रहा है ।

मेरा सभी श्रद्धालुओं से यही निवेदन है कि यदि आप अपने जीवन की वास्तव में कद्र करते हैं तो अपने अनुभव का आदर करें । आपने जो आनंद, शांति बापूजी के सत्संग-सान्निध्य में पायी है, उसका आदर करें । यदि हम कुप्रचारकों के झाँसे में आकर महापुरुषों के प्रति अपना विश्वास खोते हैं तो इससे महापुरुषों को कोई हानि नहीं है, हमारी अपनी ही हानि है । हमारा श्रद्धा-विश्वास, हमारी भीतरी सुख-शांति हमारी सबसे बड़ी पूँजी है, उसे किसी भी कीमत पर न खोयें । ❐

पूज्य बापूजी और आश्रम के खिलाफ जहर उगलनेवाले साँपों की हकीकत

पूज्य बापूजी पिछले ५० वर्षों से प्राणिमात्र के कल्याण में रत हैं। पूरे देश में बापूजी के अनेक आश्रम हैं। यहाँ आकर लोग दर्शन, सत्संग, साधना एवं समाजोत्थान व राष्ट्र-उत्थान के विविध सेवाकार्य करके अपने जीवन में सर्वांगीण उन्नति करते हैं। किसी भी तरह के वर्ण, जाति, धर्म, प्रांत या लिंग के भेदभाव के बिना करोड़ों लोग पूज्य बापूजी की अमृतवाणी व सेवा प्रवृत्तियों से लाभान्वित हो रहे हैं। इतने वर्षों में अगर ८-१० लोग, जो आश्रम से निकाले गये हैं, पैसों के लालच में षड्यंत्रकारियों का मोहरा बन के पूज्य बापूजी एवं आश्रम पर झूठे, अनर्गल आरोप लगायें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

बापूजी एवं आश्रम के ऊपर झूठे आरोप लगानेवाले इन ८-१० बिकाऊ लोगों की झूठी, मनगढ़ंत बकवास को बढ़ा-चढ़ाकर दिखानेवाला मीडिया बापूजी के हजारों आश्रमवासी एवं करोड़ों अनुयायी साधकों का अनुभव लोगों तक क्यों नहीं पहुँचाता ? इन्हें तो आश्रम में कोई बुराई नजर नहीं आयी बल्कि अनेक सकारात्मक अनुभव हुए हैं।

बापूजी एवं आश्रम पर आरोप लगानेवाले ये लोग किस चरित्र के हैं ? उनका पूर्व-जीवन क्या था इसको हम जानेंगे तो दुष्प्रचारक मीडिया का भी असली चेहरा बेनकाब होगा। दूध पीकर जहर उगलनेवाले साँप की तरह ये मीडिया में आकर आश्रम और बापूजी की बदनामी का दुष्प्रयास कर रहे हैं। वे आरोप लगा रहे हैं इसलिए हम उनके ऊपर आरोप लगा रहे हैं ऐसी बात नहीं है। उनकी करतूतों के पुख्ता सबूत हमारे पास हैं। उन्हें शीघ्र ही कानूनी कार्यवाही का भी सामना करना पड़ेगा। फिलहाल आश्रम पर आरोप लगानेवालों का असली चेहरा हम यहाँ पेश कर रहे हैं।

इससे पहले महेन्द्र चावला और अमृत प्रजापति के दुष्चरित्र और उनकी काली करतूतों को आपके सामने रखा था (पढ़ें 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका, अक्टूबर २०१३)। उसी शृंखला में कुछ और आस्तीन के साँपों के बारे में बता रहे हैं :

ब्रजबिहारी गुप्ता उर्फ आचार्य भोलानंद उर्फ ठग भोला
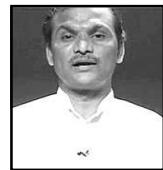
दुष्प्रचारकों की दो टके की टोली के सदस्य भोलानंद का असली नाम ब्रजबिहारी गुप्ता है। अपनी माँ को नंगी करके पीटनेवाला और 'बापू के खिलाफ बलात्कार की एफआईआर लिखवा वरना मैं तुझ पर बलात्कार करूँगा' - ऐसा अपनी जन्मदात्री माँ को कहनेवाला यह आदमी मानव नहीं, पशु भी नहीं, हैवान है !

ब्रजबिहारी ने माँ के साथ जो दुर्व्यवहार किया वह उसकी माँ और भाई ने हमें बताया है। इन बयानों की विडियो रिकॉर्डिंग भी है।

ईश्वर नायक

दूसरा खलनायक है ईश्वर नायक। आपको मालूम होगा, आश्रम पर लगाये गये आरोपों की जाँच करने के लिए न्यायाधीश डी. के. त्रिवेदी आयोग गठित किया गया था। ईश्वर ने पहले तो बापूजी और आश्रम पर बहुत सारे मनगढ़ंत आरोप लगाये लेकिन आयोग के सामने उसे सच कहना पड़ा।

वह बोला : 'जब मैं अस्पताल में भर्ती था तो पूज्य बापूजी की सूचना के अनुसार मेरी पत्नी ने मंत्रजप किया था। इससे मुझे नवजीवन मिला

था । पूज्य बापूजी बीमार व्यक्ति का उपचार करने के लिए कोई पैसा, वस्तु नहीं लेते हैं । आश्रम में आने से पहले मेरी और मेरे परिवार की मानसिक स्थिति बिगड़ी हुई थी । लेकिन आश्रम में आने के बाद मैं प्रफुल्लित और आनंदित हुआ । आश्रम के बड़ बादशाह (वटवृक्ष) की परिक्रमा करने से प्रश्नों के निराकरण हो जाते हैं, यह बात सच है, मैंने इसका अनुभव किया है ।'

पहले अनर्गल, झूठे आरोप लगाना, जाँच आयोग के सामने सच्चाई स्वीकार करना और फिर मीडिया में जाकर अपना चेहरा धुँधला करवा के वही-के-वही पहले झुठलाये हुए आरोप दोहराना, यह क्या है ?

अजय और हरेन्द्र

आश्रम और बापूजी पर काले धब्बे लगाने का निरर्थक प्रयास करनेवाले ये दो गद्दार हैं ।

पहला अजय - यह नाममात्र का साधक था । आश्रम के दैवी कार्य में उसे थोड़ी-सी भी रुचि नहीं थी । अनेक गंदी आदतों में फँसने से उसे पैसे की जरूरत हमेशा रहने लगी । आश्रम में आनेवाले लोगों की श्रद्धा तोड़ना, अनाप-शनाप बातें करके लोगों को भ्रमित करने के काम वह करने लगा । इतना ही नहीं, बहनों के प्रति उसकी गलत नजर थी । उसके ऐसे आचरण के चलते पहले तो उसे चेतावनी दी गयी पर जब वह अपनी हरकतों से बाज नहीं आया तो उसे आश्रम से निकाल दिया गया । ऐसे शख्स की बातों पर कितना विश्वास किया जाय ?

आस्तीन का दूसरा साँप है टिहरी का हरेन्द्र ।

हाथरस (उ.प्र.) के बिलारा गाँव का रहनेवाला हरेन्द्र उत्तराखंड में शिक्षक था । आश्रम में आने से पहले वह बहुत गरीब था । बापूजी के नाम पर ट्यूशन चलाना, साधकों की दुकान से उधार समान लेकर बेचना - इस तरह से हेराफेरी करके इसने लाखों रुपये ठगे । ऐसी हरकतों के चलते इसे आश्रम से निकाल दिया गया और अब यह अनर्गल दुष्प्रचार करके अपनी औकात दिखा रहा है ।

राहुल सचान

बापूजी व आश्रम को त्रस्त करने की मलिन मुरादें रखनेवाला राहुल सचान आजकल अपने मुँह पर कपड़ा बाँधकर चैनलों पर आ के अनर्गल, झूठे आरोप लगा रहा है । यह मूल दिल्ली का निवासी है । जब यह आश्रम में रहता था तो सभीके साथ झगड़ा करना, झूठ बोलना तथा उसके अन्य कई दुर्गुण बार-बार सामने आये । इसके बाद उसे सख्त चेतावनी दी गयी लेकिन वह फिर भी सुधरा नहीं । तब उसे आश्रम से निकाल दिया गया । एक बहन ने उसके खिलाफ थाने में अभद्र व्यवहार की शिकायत की थी । पुलिस केस होने के बाद वह उत्तर प्रदेश में अपने गाँव भाग गया । पुलिस ने वहाँ जाकर उसे धर दबोचा और मुकदमा चलाया । ये महाशय ४ महीने जेल की सजा भुगत चुके हैं ।

पूज्य बापूजी के शिष्यों की संख्या करोड़ों में है । उनमें से ये ८-१० लोग आश्रम व बापूजी के खिलाफ बोलते हैं । आश्रम में रहने के दौरान इन्हें बुरा अनुभव हुआ इसलिए ये लोग ऐसी बाते नहीं कर रहे हैं बल्कि ये खुद एड़ी से चोटी तक दुर्गुणों से भरे हैं इसलिए पूज्य बापूजी जैसे निर्दोष संत तथा मंगलमय और पवित्र वातावरणवाले आश्रम पर बेबुनियाद आरोप लगा रहे हैं । अब आप ही विचार कीजिये कि ऐसे दुष्चरित्र, बिकाऊ लोगों के बेबुनियाद, कपोलकल्पित आरोपों की कीमत ही क्या है ! ❐

अपने ही जाल में फँसता जा रहा है तथाकथित भोलानंद

संत श्री आशारामजी आश्रम, जम्मू में बच्चों के दफन होने का झूठा आरोप लगानेवाले ब्रजबिहारी गुप्ता उर्फ विनोद कुमार उर्फ ठग भोला उर्फ भोलानंद का जम्मू के विक्की कुमार ने भांडाफोड़ किया। विक्की कुमार ने ठग ब्रजबिहारी द्वारा उससे फोन पर की हुई बातचीत की सीडी, ब्रजबिहारी के फोन नम्बर तथा फोन की कॉल डिटेल पुलिस को सौंपी। फोरेंसिक जाँच रिपोर्ट में सीडी सही पायी गयी है। उस सीडी में ब्रजबिहारी विक्की को श्मशान घाट से बच्चों के कंकाल निकालकर बापूजी के जम्मू आश्रम में दबाने पर उसे खूब पैसे देने की बात कह रहा है। इस ठग भोला ने विक्की के साथ बातचीत में बापूजी के अन्य आश्रमों में भी गड़बड़ करने का दावा किया है। जम्मू पुलिस ने ठग भोला के विरुद्ध १२०-बी, १९४, २११, २९५, २९५-ए/३८३, १९५ और १९५-ए के तहत अपराध करने की साजिश रचना, अपराध के लिए दूसरों को उकसाने और किसी धर्मस्थान को नुकसान पहुँचाने का मामला दर्ज किया है।

कौन है शिवनाथ ?

हाल ही में शाहजहाँपुर (उ.प्र.) के शिवनाथ नाम के व्यक्ति ने पूज्य बापूजी और आश्रम पर झूठे, अनर्गल आरोप लगाये। उसने मीडिया में यह भी कहा कि ''मैं आश्रम में ८ साल से रह रहा हूँ।'' परंतु वास्तविकता यह है कि शाहजहाँपुर आश्रम को बने हुए अभी ८ साल हुए ही नहीं हैं। शिवनाथ के झूठ-कपट से लथपथ चरित्र की अब पोल खुल गयी है। शिवनाथ घर में लड़ाई-झगड़े करता था। आरोप लगानेवाली लड़की के पिता ने उसे ३००० रुपये के वेतन पर आश्रम की चौकीदारी के लिए रखा था। आश्रम में काम करते हुए उसे अभी एक वर्ष भी नहीं हुआ था। इससे पहले वह लड़की के पिता के यहाँ नौकर था।

इन सभी तथ्यों से स्पष्ट होता है कि शिवनाथ निहायती फर्जी आदमी है और पैसों के लिए सरासर झूठे व मनगढ़ंत आरोप लगा रहा है। ❐

आकर्ण धनुरासन

(गतांक का शेष)

इस आसन में शरीर की स्थिति ऐसी दिखती है जैसे कोई धनुष की प्रत्यंचा को कान तक खींचकर लक्ष्य को बेधना चाहता हो, इसलिए इस आसन का नाम 'आकर्ण धनुरासन' है।

लाभ व प्रथम प्रकार : पिछले अंक के पृष्ठ २२ पर देखें।

दूसरा प्रकार : जमीन पर बैठकर दोनों पैर फैलायें। बायाँ पैर ऊपर उठाकर उसे बायें हाथ से इस प्रकार पकड़िये कि पिंडली के नीचे के हिस्से में अँगूठा आगे और उँगलियाँ पीछे की ओर रहें। पैर का पूरा वजन हथेली पर हो। फिर दायें हाथ से पैर का एड़ीसहित ऊपरी भाग पकड़कर पैर को गर्दन पर जमायें। गर्दन को दाहिनी ओर घुमायें। फिर बायें हाथ से दाहिने पैर के पंजे का उँगलियोंवाला हिस्सा पकड़ें और दायें हाथ से बायें पैर का पंजा पकड़ें। दृष्टि दाहिनी ओर हो। धीरे-धीरे पैर सामान्य अवस्था में लायें। इसी प्रकार दूसरे पैर से भी करें। दोनों प्रकारों के अभ्यास क्रमशः बढ़ाते हुए पाँच मिनट तक किये जा सकते हैं।

सावधानी : यदि पैर, कूल्हे और पेट में किसी प्रकार का गम्भीर रोग हो तो इस आसन को न करें।

कुप्रचार से हानि संतों को नहीं, समाज को है

किसी व्यक्ति ने एक महात्मा के पास जाकर कहा : ''बाबाजी ! सनातन धर्म के प्रति कुप्रचार करनेवाले लोग कहते हैं कि 'रामायण सच्ची नहीं है।' वे लोग अपना उल्लू सीधा करते हैं यह तो हम जानते हैं लेकिन बाबाजी ! जब हम बार-बार सुनते हैं तो कभी-कभी लगता है कि यह बात सच्ची है क्या ?''

वे एक सुलझे हुए महात्मा थे। बोले : ''मैं यह तो नहीं जानता कि 'रामायण' सही है या गलत लेकिन इससे मेरा जीवन सही हो गया है और जो इसका अध्ययन करता है उसका जीवन भी सही होता है। यही प्रमाण सच्चा है। 'रामायण' के अनुसरण से मेरे कुटुम्ब में स्नेह बढ़ गया है, भाई-भाई में, पति-पत्नी में, पिता-पुत्र में मर्यादा और स्नेह बढ़ गया है और जरा-जरा-सी बात में जो दुविधा व मतभेद होते थे, कुटुम्ब में कलह होता था वह सब शांत हो गया है। एक-दूसरे को समझने की सूझबूझ बढ़ी, एक-दूसरे के काम आने की कला बढ़ी, सच्चाई बढ़ी, सद्भाव बढ़ा है। अभी हमारे कुटुम्ब में सरसता है। संसार स्वप्नवत् लग रहा है और उसको देखनेवाला आत्माराम अपना लग रहा है। आत्मा अपना है ऐसा ज्ञान-प्रकाश बढ़ रहा है। इससे बड़ा सौभाग्य क्या हो सकता है ! 'रामायण' से हम लोगों का जीवन सही हो गया और जिनको भी अपना जीवन सही करना हो वे 'रामायण' का पाठ करें और सुनें। मैं तो फिर से कहता हूँ, 'रामायण' सही है या नहीं इस कुतर्कपूर्ण विवाद में न पड़कर 'रामायण, गीता, भागवत' का फायदा लेकर अपने जीवन को सही कर लें। 'रामायण' के विषय में 'वह सही है या गलत' यह सोचना ही बेवकूफी है।''

अगर दोषदृष्टि से ही देखना हो तो पापी को भगवान श्रीकृष्ण में भी दुर्गुण दिख जायेंगे, भगवान राम में भी दोष दिख जायेंगे और संत-महापुरुषों में भी दोष दिख जायेंगे कुतर्कियों को। अगर निंदा ही करनी हो तो कोई भी निमित्त उत्पन्न करके निंदक आरोप लगाने लगेंगे।

प्रसिद्ध कवि गेटे एक सज्जन व्यक्ति थे। उनकी एक पुस्तक सज्जनों को तो बहुत अच्छी लगी किंतु जरूरी नहीं है कि अच्छी बात सभीको अच्छी लगे। कुछ निंदकों ने कवि गेटे पर ऐसे-ऐसे आरोप लगाने शुरू किये, जिसे सुनकर गेटे के प्रशंसकों को आघात लगा कि 'इतने महान कवि के लिए यह क्या अनर्गल बोला जा रहा है ?' अतः कुछ सज्जन लोग मिलकर प्रसिद्ध कवि गेटे के पास आये और बोले : ''आपकी पुस्तक बहुत ही बढ़िया है फिर भी निंदकों ने उसकी धज्जियाँ उड़ायी हैं। उनकी नीच वृत्ति आपके श्रेष्ठ कार्य को नहीं देख सकती। अतः अगर आप संकेत करें तो हम उनके आरोपों का मुँहतोड़ जवाब दे देवें।''

गेटे ने कहा : ''जिन लोगों को मेरे प्रति प्रेम है और जो मेरे स्वभाव को जानते-मानते हैं, वे लोग यदि ऐसे कुप्रचार करनेवाले हजार लोग और भी बढ़ जायें तब भी विचलित होनेवाले नहीं हैं। जिसने मुझे नजदीक से देखा है उसकी मेरे प्रति श्रद्धा कितना भी कुप्रचार होने पर भी कम नहीं होगी। वह कुप्रचार का शिकार नहीं बनेगा। बैठो, मैं आप लोगों को एक कविता सुनाता हूँ।''

कवि गेटे ने उनको टॉलस्टॉय की एक कविता सुनायी, जिसका आशय था : 'जब कोई तुम्हारी कड़ी आलोचना करता है तब तुम्हें यह स्मरण रखना चाहिए कि तुम्हारा फूल सुविकसित है इसीलिए भौंरे डंक मारने आ रहे हैं। इसी प्रकार

जब तुम्हें निंदकों के डंक लगने लगें तो समझ लेना कि तुम्हारा कार्य सुविकसित हुआ है। अर्धविकसित फूल पर भ्रमर कहाँ बैठता है ?'

इसलिए जब आलोचक अनाप-शनाप आलोचना करने लगें तब तुम्हें संतोष मानना चाहिए कि तुम्हारा पुरुषार्थ और सेवाकार्यरूपी पुष्प इतना सुविकसित हुआ है कि उन निंदकों को तकलीफ हो रही है, हालाँकि तुम्हारा इरादा उन्हें तकलीफ देने का नहीं है।

लेकिन हाँ, तुम सावधान जरूर रहना। अपने श्रद्धास्थानों के प्रति, संस्कृति के प्रति झूठी अफवाहें, कुप्रचार से दबकर बैठे मत रहना; सुप्रचार के द्वारा उनका निराकरण करते रहना, समाज में सजगता लाते रहना। श्रद्धाहीन व्यक्तियों के चक्कर में आकर अपनी श्रद्धा को कभी ढीला मत करना, सत्संग मत छोड़ना, ध्यान-भजन, जप-स्वाध्याय आदि का त्याग मत करना। जैसे दमा, टी.बी. आदि से ग्रस्त मरीज की हम सेवा तो करते हैं लेकिन उसके कीटाणु हमें न लगें इस बात की सावधानी भी रखते हैं, ऐसे ही जो अश्रद्धा के कीटाणु से ग्रस्त हो रहे हों, ऐसे लोगों से बचकर रहना। यदि ऐसे लोगों के बीच रहे, उनकी 'हाँ' में 'हाँ' मिलाते रहे तो फिर तुम्हारी श्रद्धा पर भी आँच आने लगेगी और ध्यान-भजन में रुचि कम होती जायेगी।

उन व्यक्तियों से, उन वस्तुओं से, उन परिस्थितियों से, उन बातों से और संसर्ग से बचो जो तुम्हारी श्रद्धा, भक्ति और प्रेमरस को सुखाते हों। उन्हीं व्यक्तियों, वस्तुओं और परिस्थितियों का अवलम्बन लो जिनसे तुम्हारे हृदय में श्रद्धा, भक्ति और प्रेम का स्रोत प्रकट होने में मदद मिले। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : **श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं...** श्रद्धालु ही उस परम ज्ञान को पाता है और ज्ञान से परम शांति का अनुभव यहीं कर लेता है। ❒

गुरुकुल की छात्राओं की खुदकुशी की खबर झूठी

'आज तक' आदि कुछ न्यूज चैनलों पर एक खबर को सनसनी के रूप में पेश किया गया कि 'पिछले ५ साल में संत श्री आशारामजी गुरुकुलों की ११वीं तथा १२वीं कक्षा की ९८५ छात्राएँ भागकर चली गयी हैं और २० से ज्यादा छात्राओं ने खुदकुशी कर ली है।' यह खबर बिल्कुल बोगस है। सच्चाई तो यह है कि कोई भी छात्रा गुरुकुल छोड़कर नहीं भागी है और आज तक गुरुकुल की किसी भी छात्रा ने खुदकुशी नहीं की है। देशभर में संत श्री आशारामजी आश्रम के केवल छिंदवाड़ा गुरुकुल में ही लड़कियों का छात्रावास है तथा वहाँ किसी भी लड़की ने खुदकुशी नहीं की है। इसकी पुष्टि पुलिस अधीक्षक, छिंदवाड़ा ने भी RTI (सूचना का अधिकार) के तहत कर दी है। ऐसी झूठी खबरें दिखानेवाले चैनलों की साजिश समाज के सामने आ चुकी है। अब जनता इन चैनलों को बंद करने की माँग कर रही है और इन चैनलों के विरुद्ध कई स्थानों पर केस दर्ज हो रहे हैं। ❒

भाजपा प्रवक्ता ने उठाये मीडिया के पक्षपात पर सवाल

भाजपा की प्रवक्ता मीनाक्षी लेखी ने मीडिया चैनलों द्वारा हो रहे पक्षपात एवं अतिरेक पर कड़ी आपत्ति जताते हुए कहा कि चाहे वे चैनल हों चाहे अखबार हों, मीडिया हररोज लगातार आशारामजी बापू की ही खबरें चला रहा है, जबकि उन्होंने गैरकानूनी काम किया है या नहीं, यह अभी साबित नहीं हुआ है। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या देश में ऐसे कोई पादरी नहीं हुए या ऐसे कोई मौलवी नहीं हुए जिन पर इस तरीके के आरोप लगे हों ? एक पुस्तक है, केरल का केस है जिसके अंदर एक नन की पूरी जीवनी है कि चर्च के अंदर पादरियों ने क्या-क्या किया और हालत यह है कि उन विषयों को आप (मीडियावाले) उठाते नहीं हैं। ❒

मेरठ की छात्रा के पिता ने बापूजी को दी क्लीन चिट

हिन्दुस्तान व दैनिक जागरण । मेरठ की जिस छात्रा को संत आशारामजी बापू की पीड़िता बताया जा रहा था, उसके पिता शैलेष शुक्ला ने मैनपुरी में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर बापू पर लगाये तमाम आरोपों को झूठा बताते हुए खुद को उनका भक्त बताया ।

शैलेष शुक्ला ने कहा कि ''वे कहीं गायब नहीं हुए और न ही उनकी पत्नी और न उनके बच्चे कहीं गायब हैं । उनकी पुत्री आज भी छिंदवाड़ा स्थित संत श्री आशारामजी गुरुकुल में पढ़ रही है । उनके या उनकी पुत्री के साथ आशारामजी ने कोई गलत काम नहीं किया, न ही आशारामजी या उनके समर्थकों ने उन्हें कभी प्रताड़ित किया ।'' शैलेष ने आशारामजी को अपना गुरु बताते हुए कहा कि ''शाहजहाँपुर निवासी जो लड़की आशारामजी पर आरोप लगा रही है, उसके परिवार के लोग उन पर दबाव बना रहे हैं कि 'वे (शैलेष) भी आशारामजी के खिलाफ उनका साथ दें ।' जोधपुर पुलिस का जाँच अधिकारी दिन में उनसे १०-१० बार फोन करके आशारामजी के खिलाफ बयान देने का दबाव बना रहा है । इसी डर से वे परिवारसहित मेरठ से गाँव चले आये थे । कुछ दिनों के लिए वे वैष्णो देवी के दर्शन करने चले गये थे । अब वे परिवार के साथ अपने गाँव आ गये हैं ।'' सिविल लाइन, मेरठ के इंस्पेक्टर अजय अग्रवाल ने भी इस बात की पुष्टि की कि 'जोधपुर पुलिस की पूछताछ से बचने के लिए ही शैलेष शुक्ला सपरिवार घर छोड़कर चले गये थे ।'

भाइयों के आरोप सही नहीं

मीडिया में खूब उछाला गया था कि आश्रम के लोगों ने ही उन्हें गायब किया है । इस आरोप की पोल खोलते हुए शैलेषजी ने कहा कि ''मेरे भाइयों के आरोप सही नहीं हैं । मैंने इस संबंध में मेरठ पुलिस से शिकायत की थी ।'' उन्होंने आशारामजी के लोगों पर किसी तरह के प्रलोभन देने और धमकाने के आरोपों को नकार दिया । ❑

षड्यंत्रकारियों से सावधान !

कुछ दिन पूर्व संत श्री आशारामजी बापू के वलसाड़ (गुज.), जबलपुर (म.प्र.), पुष्कर (राज.) और गाजियाबाद (उ.प्र.) आश्रमों में तोड़फोड़, मारपीट, आगजनी और आश्रम-परिसर सील करने की झूठी खबरें फैलायी गयी थीं । यह अफरातफरी का माहौल पैदा करने की सोची-समझी साजिश के तहत किया जा रहा है । वलसाड़ में आश्रम-परिसर के बाहर, नजदीक के एक मंदिर में तोड़फोड़ एवं आगजनी हुई थी । आश्रम का इस मंदिर से कोई संबंध नहीं है । आश्रम में किसी भी प्रकार की आगजनी आदि की खबर बिल्कुल गलत है । जबलपुर आश्रम में भी किसी भी तरह की कोई तोड़फोड़ नहीं हुई है । पुष्कर आश्रम में जो पहले से ही निर्माण-कार्य चल रहा है, उसे ही तोड़फोड़ बताकर जनता-जनार्दन को गुमराह किया जा रहा है । इसी तरह गाजियाबाद, देहरादून आश्रमों को सील कर देने की खबरें भी सरासर गलत हैं ।

इन खबरों के द्वारा एक झूठा कपोलकल्पित जनाक्रोश दिखाने की कोशिश की जा रही है, जो वास्तव में है ही नहीं । कहीं-कहीं कुछ बिकाऊ असामाजिक तत्त्वों की टोली को सामने रखकर, उनके द्वारा असामाजिक कृत्य करवाकर उसे जनता की प्रतिक्रिया के रूप में दिखाने का भी प्रयास किया जा रहा है । कई हिन्दू संगठनों एवं धार्मिक संस्थाओं ने मीडिया के कुछ चैनलों द्वारा किये जानेवाले ऐसे प्रयासों की कड़ी निंदा की है ।

खबर और मीडिया की बेताबी

– आशुतोष

आईबीएन–7 के मैनेजिंग एडिटर

पिछले बीस-पचीस दिनों से जिस तरह से आशाराम बापू के मसले पर स्टूडियो के अंदर तीन-तीन, चार-चार, पाँच-पाँच घंटे और तमाम जटा-जूटधारी बाबाओं, साइकोलॉजिस्टों, सेक्सोलॉजिस्टों को बुला-बुलाकर जिस तरह से चर्चा की जा रही है, क्या इस देश के अंदर सबसे बड़ी खबर यही है ? क्या सेक्स को बेचने की कोशिश नहीं की जा रही है ? क्या मीडिया, टीवी चैनल इसके लिए अभिशप्त नहीं हैं ? क्या वे भयंकर गलती नहीं कर रहे हैं ? हम मीडियावाले इसको कब तक उचित ठहराते रहेंगे ?

एक आधारहीन खबर कई दिनों तक क्यों छायी रही ? टीवी चैनलों के बारे में तो कहा ही जाता है कि वे टीआरपी के लिए कुछ भी कर सकते हैं पर अखबारों ने ऐसा क्यों किया ? उन पर तो टीआरपी का दबाव नहीं होता। टीआरपी ही टीवी का सबसे बड़ा रोग है। टीआरपी से ही तय होती है चैनल को मिलनेवाले विज्ञापन की कीमत। जितनी रेटिंग, उसी अनुपात में पैसा !

कुछ चैनलों ने तो खबर से तौबा ही कर ली। जितना सनसनीखेज विडियो उतनी अधिक रेटिंग - ऐसी मान्यता बनी। जो खबर के अलावा भूत-प्रेत दिखाते थे, ऐसे चैनलों ने जब खबर भी दिखायी तो उसे मदारी का खेल बना दिया। खबर से ज्यादा खबर का 'ट्रीटमेंट' महत्त्वपूर्ण हो गया।

पिछले दिनों टीवी जगत में फिर प्रतिस्पर्धा अचानक बढ़ी। कुछ नये चैनल आगे निकल गये, स्थापित पीछे रह गये। खबरों में फिर भाँग पड़ने लगी। आशाराम बापू की खबर में इसका नमूना फिर दिखा। इस खबर से धर्म जुड़ा था, बाबा के लाखों अनुयायी थे। रेटिंग के भूखे टीवी एडिटर इस खबर पर मानो टूट पड़े। कुछ चैनलों ने तो सारी सीमाएँ लाँघ दीं। कुछ समय बाद बापू की खबर से थकान होने लगी और बिल्ली के भाग्य से (डोंडियाखेड़ा की खबर का) 'खजाना' टूट पड़ा। कुछ टीवी चैनल लपके, बाकी ने अनुसरण किया। खबर टीवी पर चली तो अखबार कहाँ पीछे रहते ? इस खबर ने उनका भी पर्दाफाश किया है। पिछले कुछ सालों से टीवी की बहुतायत ने अखबार के पत्रकारों का काम आसान कर दिया। सब कुछ जब टीवी पर उपलब्ध है तो भागदौड़ करने की क्या जरूरत ? ये पत्रकार घर बैठे रिपोर्टिंग करने लगे हैं। हालाँकि अभी भी कुछ अच्छे पत्रकार हैं, जो समाज में दिखते हैं। लेकिन ज्यादातर टीवी का ही अनुसरण करते हैं। फिर जब दस चैनल एक साथ एक खबर को चला रहे हों तो उसे गलत साबित करने की हिम्मत कितनों में होगी ? इसलिए जो कभी टीवी का मजाक उड़ाया करते थे, वे अब टीवी के आभामंडल से अभिभूत हैं। ऐसे में खबरों में फिल्टर कौन लगायेगा (कि कौन-सी सच्ची और कौन-सी झूठी) ? ❑

अब तो आवाज बुलंद करो

पिछले दो महीनों से भारत के सारे टीवी चैनलों पर लगातार एक मुद्दा उठ रहा है और वह है आशारामजी बापू पर आरोप का मामला। इस मामले में बिकाऊ मीडिया टीआरपी की हवस पूरी करने में जुटा है। इस अत्याचार के खिलाफ अगर कोई बोलेगा नहीं तो मीडिया एकतरफा हमला करके अपने मंसूबे में सफल हो जायेगा। हम तो इसके खिलाफ बोलेंगे क्योंकि यह अशोभनीय है, असहनीय है और अब अति हो गयी है। अब आप भी कायरता का नहीं पुरुषार्थ का परिचय देंगे और इस विषय पर आवाज उठायेंगे।

– सुरेश चव्हाणके, चेयरमैन, सुदर्शन चैनल

जैविक घड़ी पर आधारित दिनचर्या

उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायुष्य की प्राप्ति

समय एवं जीवनी शक्ति	कार्य
प्रातः ३ से ५ (जीवनी शक्ति विशेषरूप से फेफड़ों में होती है)	थोड़ा गुनगुना पानी पीकर खुली हवा में घूमना एवं प्राणायाम करना। शरीर स्वस्थ व स्फूर्तिमान होता है। ब्राह्ममुहूर्त में उठनेवाले लोग बुद्धिमान व उत्साही होते हैं और सोते रहनेवालों का जीवन निस्तेज हो जाता है।
प्रातः ५ से ७ (बड़ी आँत में)	प्रातः जागरण से लेकर सुबह ७ बजे के बीच मल-त्याग एवं स्नान कर लेना चाहिए। सुबह ७ बजे के बाद जो मल-त्याग करते हैं उन्हें अनेक बीमारियाँ होती हैं।
सुबह ७ से ९ (अमाशय यानी जठर में)	इस समय (भोजन के २ घंटे पूर्व) दूध अथवा फलों का रस या कोई पेय पदार्थ ले सकते हैं।
९ से ११ (अग्न्याशय व प्लीहा में)	यह समय भोजन के लिए उपयुक्त है। भोजन के बीच-बीच में गुनगुना पानी (अनुकूलता अनुसार) घूँट-घूँट पियें।
दोपहर ११ से १ (हृदय में)	दोपहर १२ बजे के आसपास मध्याह्न-संध्या करने का हमारी संस्कृति में विधान है। भोजन वर्जित।
दोपहर १ से ३ (छोटी आँत में)	भोजन के करीब २ घंटे बाद प्यास-अनुरूप पानी पीना चाहिए। इस समय भोजन करने अथवा सोने से पोषक आहार-रस के शोषण में अवरोध उत्पन्न होता है व शरीर रोगी तथा दुर्बल हो जाता है।
दोप. ३ से ५ (मूत्राशय में)	२-४ घंटे पहले पिये पानी से इस समय मूत्र-त्याग की प्रवृत्ति होगी।
शाम ५ से ७ (गुर्दे में)	इस समय हलका भोजन कर लेना चाहिए। सूर्यास्त के १० मिनट पहले से १० मिनट बाद तक (संध्याकाल में) भोजन न करें। शाम को भोजन के तीन घंटे बाद दूध पी सकते हैं।
रात्रि ७ से ९ (मस्तिष्क में)	इस समय मस्तिष्क विशेष रूप से सक्रिय रहता है। अतः प्रातःकाल के अलावा इस काल में पढ़ा हुआ पाठ जल्दी याद रह जाता है।
रात्रि ९ से ११ (रीढ़ की हड्डी में स्थित मेरुरज्जू में)	इस समय की नींद सर्वाधिक विश्रांति प्रदान करती है। इस समय का जागरण शरीर व बुद्धि को थका देता है।
रात्रि ११ से १ (पित्ताशय में)	इस समय का जागरण पित्त-विकार, अनिद्रा, नेत्ररोग उत्पन्न करता है व बुढ़ापा जल्दी लाता है। इस समय नई कोशिकाएँ बनती हैं।
१ से ३ (यकृत में)	इस समय का जागरण यकृत (लीवर) व पाचन तंत्र को बिगाड़ देता है।

ऋषियों व आयुर्वेदाचार्यों ने बिना भूख लगे भोजन करना वर्जित बताया है। अतः प्रातः एवं शाम के भोजन की मात्रा ऐसी रखें, जिससे ऊपर बताये समय में खुलकर भूख लगे।

निर्दोष पूज्य बापूजी की रिहाई के लिए देश-विदेश में हो रहे हैं सम्मेलन, जप, यज्ञ, विरोध-प्रदर्शन

विश्वमानव का मंगल चाहने और करने वाले पूज्य बापूजी पर हो रहा अत्याचार बंद हो एवं उनके खिलाफ चल रहे बोगस केस जल्द-से-जल्द खारिज करके पूज्य बापूजी को रिहा किया जाय - इस उद्देश्य से देश-विदेश में श्री योग वेदांत सेवा समितियों, युवा सेवा संघों, महिला उत्थान मंडलों एवं विभिन्न धार्मिक संगठनों के अलावा करोड़ों साधकों द्वारा पिछले ५० दिनों से रैलियों एवं धरना-प्रदर्शनों के साथ जप एवं यज्ञ सतत किये जा रहे हैं।

कैलिफोर्निया (यूएसए), कनाडा, जयपुर, बाड़मेर, पुष्कर, जोधपुर, कोटा, उदयपुर, सागवाड़ा, आमेट (राजस्थान), बदलापुर जि. ठाणे, गोरेगाँव-मुंबई, धुलिया, सोलापुर, अकोला, नासिक, अमलनेर, जामनेर, जलगाँव, गोंदिया, नंदुरबार, पुणे, अंजनगाँव, अमरावती, अहमदनगर, यवतमाल, प्रकाशा, लातूर, भुसावल, नागपुर, भंडारा, वर्धा (महाराष्ट्र), छिंदवाड़ा, रतलाम, सागर, बालाघाट, भोपाल, बड़गाँव जि. खरगोन, इंदौर, ग्वालियर, देवास, शाजापुर, रीवा, सतना, होशंगाबाद, विदिशा, जबलपुर, बैतूल, हरदा, गुना, दमोह, शहडोल, सिहोर, राजगढ़ (म.प्र.), अम्बाला, फरीदाबाद (हरियाणा), बरेली, जौनपुर, आगरा, उझानी, मुरादाबाद, हरदोई, बलिया, बाराबंकी, सुल्तानपुर, गोरखपुर, बस्ती, सीतापुर, लखीमपुर, सिधौली, कानपुर, शक्तिनगर, भदोही, केराकत, झाँसी, लखनऊ, इलाहाबाद, एटा, अलीगढ़, बदायूँ, गाजियाबाद, हापुड़, सहारनपुर (उ.प्र.), हिम्मतनगर, बड़ौदा, भावनगर, पुरेनिया, बारडोली, सूरत, भरूच, अंकलेश्वर, भैरवी, राजकोट, अहमदाबाद, गांधीधाम, वलसाड (गुजरात), रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग, थानखमरिया, राजनांदगाँव, कवर्धा, बेमेतरा, धमतरी, चिरमिरी, कोरबा, भाटापारा, बेलौदी जि. दुर्ग (छ.ग.), हरिद्वार, काशीपुर, देहरादून, ऋषिकेश (उत्तराखंड), राँची, जमशेदपुर (झारखंड), लुधियाना, जालंधर, पटियाला, राजपुरा, भटिंडा, फिरोजपुर, सुजानपुर, कपूरथला, होशियारपुर, मुकेरियाँ, पठानकोट, फाजिल्का, गोविंदगढ़, चंडीगढ़, पंचकुला (पंजाब), भुवनेश्वर, राउरकेला (ओड़िशा), पटना, सासाराम, मुजफ्फरपुर (बिहार), सोलन, पौंटा साहिब (हि.प्र.), बैंगलोर, बेलगाम, गुलबर्गा (कर्नाटक), निजामाबाद, तांदूर, विजयवाड़ा, विशाखापट्टनम (आं.प्र.), दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई, जम्मू, गोवा आदि स्थानों पर जप एवं हवन सतत जारी है।

भारतीय संस्कृति, हिन्दू साधु-संतों एवं मातृभूमि के प्रति दृढ़ निष्ठा रखनेवाले देशवासियों के हृदय बापूजी के खिलाफ चल रहे भीषण षड्यंत्र व कूटनीति को देखकर अत्यंत पीड़ित हो रहे हैं। ऐसे संस्कृतिप्रेमियों एवं विभिन्न धर्मों व सम्प्रदायों के साधु-संतों द्वारा देशभर में जगह-जगह सभीको एकजुट करने हेतु संत-सम्मेलनों एवं जन-सत्याग्रहों का आयोजन हो रहा है।

२८ सितम्बर को **दिल्ली** एवं **चंडीगढ़** में संत-सम्मेलन सम्पन्न हुए। इसके अलावा इसी दिन **श्रीरामपुर, जि. अहमदनगर (महा.)** में आयोजित संत-सम्मेलन में सरलाबेट के मठाधिपति एवं जूना अखाड़ा के महामंडलेश्वर श्री रामगिरिजी महाराज, श्रीक्षेत्र देवगढ़ संस्थान के मठाधिपति भास्करगिरिजी महाराज, पंचदशनाम अखाड़ा के साँईं सिद्धगिरिजी महाराज, हिन्दू जनजागृति समिति के महाराष्ट्र प्रवक्ता सुनील घनवट, सुनील गिरिजी महाराज तथा राष्ट्रीय

स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल आदि के अनेक पदाधिकारियों ने एक स्वर में पूज्य बापूजी पर हो रहे षड्यंत्र के खिलाफ आवाज बुलंद की । **२ अक्टूबर** को **राजनांदगाँव (छ.ग.)** में **'विशाल हिन्दू विचार सभा'** का आयोजन किया गया, जिसमें विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष श्री सुभाष अग्रवाल तथा जिला अध्यक्ष श्री मधुसूदन शुक्ला, कबीर आश्रम के श्री कुमार साहेब, शिवानंद आश्रम के स्वामी श्री विद्यानंद सरस्वतीजी, स्वदेशी जागरण मंच के नरेन्द्र ठाकुर और अमलेंदु हाजरा आदि सभीने एकजुट होकर इस षड्यंत्र का विरोध किया ।

छत्तीसगढ़ में बालोद, धमतरी, भाटापारा, बिलासपुर, कोरबा, राजनांदगाँव, भिलाई, बेमेतरा, कवर्धा, नंदिनीनगर, अहिवारा, राजिम में साधक-सम्मेलन का आयोजन हुआ । रायपुर में प्रदेशस्तरीय विराट साधक-सम्मेलन का आयोजन किया गया ।

समाज तक सच्चाई पहुँचे और कुप्रचारकों की मनगढ़ंत, झूठी कहानियों से जनता गुमराह न हो इस हेतु **६ अक्टूबर** को **अदिलाबाद, आंध्र प्रदेश** व इसी दिन **ओड़िशा** के **सहजबहल जि. सुंदरगढ़** में व **७ अक्टूबर** को **सुंदरगढ़, ८ अक्टूबर** को **बृजराजनगर, ९ अक्टूबर** को **केओंजर, १० अक्टूबर** को **जगन्नाथपुरी** आदि स्थानों पर **संत-सम्मेलन** आयोजित हुए । इनमें निरंजनी अखाड़ा के अवधूत महामंडलेश्वर श्री स्वात्मबोधानंद पुरीजी महाराज (हरिद्वार), वैष्णव सम्प्रदाय एवं दिगम्बर अखाड़ा के हरिदासजी महाराज (अयोध्या), कथावाचक फूलकुमार शास्त्रीजी (जम्मू), दादू पंथ सम्प्रदाय अखाड़ा के श्रवण रामजी (जेतारण, जोधपुर), ओमकारानंदजी (सुंदरगढ़), बलरामदासजी महाराज तथा मनोजानंदजी महाराज आदि संतों ने बापूजी के खिलाफ हो रहे अन्याय के विरुद्ध आवाज उठायी ।

जमशेदपुर में **२० अक्टूबर** तथा **भुवनेश्वर** में **२७ अक्टूबर** को पूर्वी भारत की श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं साधकों का सम्मेलन हुआ, जिसमें बिहार, झारखंड, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल की प्रमुख समितियों के पदाधिकारियों एवं मुख्य सेवाधारियों ने भाग लिया ।

देश के विभिन्न स्थानों पर पूज्य बापूजी के समर्थन में रैलियाँ एवं धरना-प्रदर्शन समय-समय पर किये जा रहे हैं । जंतर-मंतर, दिल्ली तथा जम्मू में संस्कृतिप्रेमी जनता द्वारा धरना-प्रदर्शन निरंतर जारी है ।

स्थानाभाव के कारण सभी स्थानों के नाम यहाँ नहीं दे पा रहे हैं । अन्य अनेक स्थानों के हवन एवं रैलियों आदि की तस्वीरें आप आश्रम की वेबसाइट www.ashram.org पर अवश्य देखें । ❐

गुमराह करनेवालों से बचें !

ओमजी महाराज

ओमजी महाराज का संत श्री आशारामजी आश्रम से कोई लेना-देना नहीं है । पूज्य संत श्री आशारामजी बापू का ओजस्वी पार्टी से कोई संबंध नहीं है । इसलिए ओमजी या इस प्रकार के अन्य व्यक्ति, संगठन आदि द्वारा बापूजी, संत श्री आशारामजी आश्रम या ओजस्वी पार्टी के नाम पर अथवा किसी भी तरीके से साधकों, भक्तों से पैसे, समर्थन या कोई भी माँग की जाय तो उनको सहयोग न दें अपितु तुरंत संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद को सूचित करें ।

ओमजी द्वारा दिल्ली के कुछ साधकों के विरुद्ध दिये गये वक्तव्यों से कोई भी भ्रमित न हों । वे संत श्री आशारामजी आश्रम के अधिकृत प्रवक्ता नहीं हैं । उनके द्वारा श्री नरेन्द्र मोदी एवं विभिन्न पार्टियों के प्रमुख व्यक्तियों पर दी गयी टिप्पणियों से आश्रम का कोई भी संबंध नहीं है, इसके लिए ओमजी खुद जिम्मेदार हैं ।